Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 127 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, मंगलवार 05 नवम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

कंजूस अपना धन जोड़-जोड़ कर दूसरों को छोड़ जाता है।

Who will be a greater donor than a miser who accumulating wealth leaves it for others.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया तीन दिवसीय छत्तीसगढ़ राज्योत्सव का शुभारंभ

डबल इंजन की सरकारें छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश को तेजी से लेकर जा रही विकास की राह पर : डॉ. मोहन यादव

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य स्थापना दिवस के मौके पर आयोजित राज्योत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि डबल इंजन की सरकारें छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश को तीव्र गति से विकास की राह पर लेकर जा रही है। डॉ. यादव ने छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में संचालित जनहितैषी योजनाओं और माओवादी आतंक के विरूद्ध संचालित अभियान की सफलता की सराहना की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ से माओवाद समाप्ति की ओर है।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की साझा संस्कृति है साझा विचार है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया, यह सम्मान ऐसे ही हासिल नहीं हुआ। छत्तीसगढ़ के लोग अपनी सहजता-सरलता के लिए, अपने धान के कटोरे के लिए और अपने प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है। रायपुर से बस्तर तक विकास का नया आयाम स्थापित हुआ है। यहां डबल इंजन की सरकार बहुत तेजी से विकास की राह पर बढ़ रही है। छत्तीसगढ़ में प्रभु श्रीराम ने अपना बहुत समय गुजारा है। माता शबरी के जूठे बेर खाने वाला प्रसंग भी छत्तीसगढ़ का है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान राम और भगवान कृष्ण के कारण से हमारा गौरवशाली अतीत बना है, उसे सहेजने के लिए हमारी सरकार काम करेगी। भगवान श्री कृष्ण की भी जिन जगहों पर लीलाएं हुई हैं वहां धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने का काम हम कर रहे हैं। राज्योत्सव का दीपोत्सव के साथ आयोजन हुआ। इससे इस आयोजन की कीर्ति बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि हमारे यहां लाडली बहन योजना है आपके यहां महतारी वंदन योजना है। हम सब तेजी से विकास के पथ पर बढ़ते रहेंगे।

- डॉ. मोहन यादव ने माओवादी आतंक के विरुद्ध छत्तीसगढ़ में चलाये जा रहे अभियान की प्रशंसा की
- राम और कृष्ण हमारी साझा संस्कृति, धार्मिक स्थलों के विकास के लिए मिलकर करेंगे काम
- मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा- विकसित छत्तीसगढ़ के विजन को पूरा करने तैयारी पूरी
- मुख्यमंत्री साय ने कहा- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अधिकांश गारंटी को हमने 10 माह में ही पूरा किया

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने राज्योत्सव के शुभारंभ समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि राज्योत्सव के शुभारंभ के लिए मध्यप्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आये हैं। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन की शुरूआत छत्तीसगढ़ के शहीद वीरनारायण सिंह, वीर गुंडाधुर सहित अन्य शहीदों के नमन से की। देश भर में जनजातीय समुदाय के शौर्य के प्रतीक बिरसा मुंडा का भी उन्होंने स्मरण किया। उन्होंने गुरु बाबा घासीदास, मिनी माता और महाराजा चक्रधर सिंह जैसी विभूतियों को भी नमन किया। मुख्यमंत्री साय ने पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का पुण्य स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मुख्यमंत्री ने भगवान श्रीराम, माता शबरी, मधेश्वर महादेव तपोस्थल में ऋषि अगत्स्य सहित अन्य ऋषियों का भी स्मरण किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश का प्रेम सगे भाईयों की तरह है। दोनों राज्यों का स्थापना दिवस एक ही दिन है। मैं डॉ. मोहन यादव जी को भी स्थापना दिवस की बधाई देता हूँ और मध्यप्रदेश के भी तीव्र विकास की कामना करता हूँ। छत्तीसगढ़ आज 25 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इन 24 सालों की विकास यात्रा आपने देखी है। डॉ. रमन सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में छत्तीसगढ़ में हर क्षेत्र में विकास हुआ। यहां आईआईटी, आईआईएम, एम्स और लॉ यूनिवर्सिटी जैसे संस्थान स्थापित हुए। धान खरीदी और पीडीएस की मजबूत व्यवस्था स्थापित हुई। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार को दस महीने हुए हैं। इतने कम समय में ही हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अधिकांश गारंटी को पूरा कर दिया है। चाहे 3100 रूपए प्रति क्विंटल की दर से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदी का वायदा हो या माताओं-बहनों को एक हजार रुपए देने की बात हो, रामलला दर्शन योजना की बात हो, पीएससी परीक्षा की जांच हो। सभी काम दस महीनों में पूरे किये गये हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें विकसित छत्तीसगढ़ की संकल्पना को पूरा करना है।

इस मौके पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि अटल जी ने छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया। आज राज्य में जो विकास हुआ, वह अटल जी की वजह से हो पाया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने चुनावी सभा में झारखंड मुक्ति मोर्चा, कांग्रेस और आरजेडी के गठबंधन पर साधा निशाना

चाईबासा (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को झारखंड के चाईबासा में चुनावी सभा में आदिवासियों से जुड़े मुद्दों को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा, कांग्रेस और आरजेडी के गठबंधन पर बड़ा हमला बोला।

उन्होंने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा आज उन पार्टियों की गोद में बैठा है, जिनके दामन पर आदिवासियों के खून के छींटे हैं और जिनके नेता कहते थे कि झारखंड उनकी लाश पर बनेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कोल्हान प्रमंडल में 80 के दशक में हुए बहुचर्चित गुवा गोलीकांड का उल्लेख करते हुए कहा कि कांग्रेस के हाथ आदिवासियों के खून से रंगे हैं। उस वक्त देश और तत्कालीन बिहार में कांग्रेस की सरकारें थीं, जिसने अपना हक और अलग झारखंड राज्य मांग रहे आदिवासी भाइयों को गोली से भून डाला था। उनके साथ अंग्रेजों की तरह बर्बरता हुई थी। अब उस पार्टी के कंधे का सहारा लेकर झामुमो का सरकार चलाना झारखंड के लिए सबसे बड़ा अपमान है। उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा पर पूर्व सीएम चंपई सोरेन और झामुमो की विधायक रहीं सीता सोरेन को अपमानित करने का आरोप मढ़ते हुए कहा कि इन दोनों के साथ जो सलूक हुआ, वह हर आदिवासी का अपमान है और इस चुनाव में वे इसका बदला जरूर लेंगे। हाल में सीता सोरेन के लेकर कांग्रेस के मंत्री इरफान अंसारी की अमर्यादित टिप्पणी को दुर्भाग्यजनक बताते हुए पीएम मोदी ने कहा कि बहन सीता सोरेन के बारे में कांग्रेस के नेता ने हाल में जो कुछ कहा है, वह हर आदिवासी बहन-बेटी का अपमान है। उन्होंने आदिवासी समाज की बहन के लिए कैसी भाषा का इस्तेमाल किया है? हैरत तो यह कि यहां के सीएम की तरफ से इस मामले में एक शब्द तक नहीं निकला। यही जेएमएम की सच्चाई है। उसे सत्ता सुख में आदिवासी महिलाओं का भी अपमान स्वीकार है।

यूपी में 27,764 प्राइमरी और जूनियर स्कूलों को बंद करने का फैसला वंचितों के खिलाफ : प्रियंका गांधी

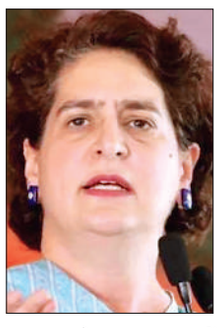

लखनऊ (आरएनएस)। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता और वायनाड से उम्मीदवार प्रियंका गांधी ने यूपी में 27,764 प्राइमरी और जूनियर स्कूलों के बंद होने की चर्चा को लेकर भाजपा पर निशाना साधा है। उन्होंने इस फैसले को शिक्षा क्षेत्र के साथ-साथ दलित, पिछड़े, गरीब और वंचित तबकों के बच्चों के खिलाफ बताया है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने सोमवार को सोशल मीडिया मंच एक्स में लिखा कि उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने 27,764 प्राइमरी और जूनियर स्कूलों को बंद करने का फैसला लिया है। यह कदम शिक्षा के साथ-साथ दलित, पिछड़े, गरीब और वंचित तबके के बच्चों के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि यूपीए सरकार शिक्षा के अधिकार का कानून लाई थी, इसके तहत व्यवस्था की गई थी कि हर एक किलोमीटर की परिधि में एक प्राइमरी विद्यालय हो, ताकि हर तबके के बच्चों के लिए स्कूल सुलभ हो। कल्याणकारी नीतियों और योजनाओं का मकसद मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि जनता का कल्याण करना है। भाजपा नहीं चाहती कि कमजोर तबके के बच्चों के लिए शिक्षा सुलभ हो। इसके पहले इस मुद्दे पर बसपा प्रमुख मायावती भी सरकार को घेर चुकी हैं।

उत्तराखंड में अनियंत्रित होकर गहरी खाई में गिरी यात्रियों से भरी बस, 22 लोगों की मौत

अल्मोड़ा (आरएनएस)। उत्तराखंड के अल्मोड़ा में सोमवार सुबह एक दर्दनाक हादसा हुआ है। यहां सल्ट तहसील के मारचूला स्थित कूपी गांव के पास बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस हादसे में 22 लोगों की मौत हो गई। बस में कुल 40 यात्री सवार थे। पुलिस प्रशासन ने रेस्क्यू का काम तेज कर दिया है।

जानकारी के अनुसार सोमवार सुबह रामनगर से एक बस रानीखेत की ओर को जा रही थी। बस में 40 यात्री सवार थे। सल्ट के कूपी के पास चालक ने बस से नियंत्रण खो दिया। देखते ही देखते बस गहरी खाई में समा गई। बस के गिरते ही यात्रियों में चीख पुकार मच गई।

हादसे के वक्त कुछ यात्री बाहर गिर पड़े। जख्मी यात्रियों ने सुबह करीब 9 बजे कंट्रोल रूम को सूचना दी। आपदा प्रबंधन अधिजारी विनीत पाल ने बताता की सल्ट और रानीखेत से टीमों को घटनास्थल भेजा गया है। जिस जगह यह हादसा हुआ है वह पौड़ी-अल्मोड़ा सीमा के नजदीक है। यह जगह रामनगर के नजदीक है। इस संबंध में डीसी आलोक कुमार पांडे ने बताया कि एंबुलेंस भेज दी गयी है। एसडीएम व पुलिस के जवान मौके पर पहुंच गए हैं। राहत बचाव का तेजी से किया जा रहा है।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने दुख जाहिर करते हुए कहा कि जनपद अल्मोड़ा के मार्चुला में हुई दुर्भाग्यपूर्ण बस दुर्घटना में यात्रियों के हताहत होने का अत्यंत दुखद समाचार प्राप्त हुआ है। जिला प्रशासन को तेजी से साथ राहत और बचाव अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। घटना स्थल पर स्थानीय प्रशासन और एसडीआरएफ की टीमें घायलों को निकालकर उपचार के लिए निकटतम स्वास्थ्य केंद्र तक पहुंचाने हेतु तेजी से कार्य कर रही हैं। आवश्यकता पड़ने पर गंभीर रूप से घायल यात्रियों को एयरलिफ्ट करने के लिए भी निर्देश दिए गए हैं।'

भाजपा नेता बीबी त्यागी ने थामा 'आप' का दामन

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारतीय जनता पार्टी के नेता और लक्ष्मी नगर से निगम पार्षद बी.बी. त्यागी ने सोमवार को दिल्ली में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) का दामन थाम लिया। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल तथा पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई। मनीष सिसोदिया ने कहा कि वह अपनी पत्रकारिता के दिनों से ही बी.बी. त्यागी को जानते हैं। उनका 'आप' में शामिल होना निश्चित तौर पर पार्टी को मजबूती देगा। उनका लंबा राजनीतिक इतिहास रहा है। उन्होंने कहा, उनका आना हमारी पार्टी के साथ-साथ पूरी दिल्ली को राजनीतिक मोर्चे को हमारे पक्ष में करेगा। आप में शामिल होने के बाद बी.बी. त्यागी ने कहा, मैं पार्टी के लिए निष्ठा और ईमानदारी से काम करूंगा। मैं पार्टी को मजबूत करने की दिशा में काम करूंगा। जनता की सेवा करना ही मेरा उद्देश्य है। जन सेवा के लिए आम आदमी पार्टी से बेहतर कोई सेवा नहीं है।

रायपुर में दीपावली मिलन समारोह में शामिल हुए पूर्व सांसद एवं रायपुर दक्षिण से भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय समेत कई बड़े नेता भी हुए सम्मिलित

रायपुर (विश्व परिवार)। पूर्व सांसद और रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी रायपुर में दीपावली मिलन समारोह में शामिल हुए। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय समेत कई बड़े नेता भी शामिल हुए। इस दौरान भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी ने सभी को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए प्रदेश की समृद्धि और खुशहाली की कामना की। साथ ही उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य अपने 24 वर्ष पूरे कर चुका है और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार में हमारा युवा छत्तीसगढ़ विकसित राज्य बनने की ओर अग्रसर है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भाजपा की डबल इंजन सरकार में प्रभु श्री राम का ननिहाल हमारा छत्तीसगढ़ उन्नति की नित नई ऊंचाईयों को छूते हुए विकसित छत्तीसगढ़ के रुप में उभरेगा।

मायावती ने भाजपा और कांग्रेस पर साधा निशाना

लखनऊ (आरएनएस)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने भाजपा और कांग्रेस के घोषणा पत्र को लेकर निशाना साधा और कहा कि चुनाव में मिथ्या प्रचारों व वादों की भरमार लगा रखी है। बसपा मुखिया मायावती ने सोमवार को जारी एक बयान में कहा कि देश में व्यापक स्तर पर गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई तथा कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, साफ पानी एवं कानून व्यवस्था जैसी बुनियादी जरूरतों के अभाव से करोड़ों लोगों का जीवन त्रस्त है, लेकिन भाजपा और कांग्रेस एवं इनकी सरकारें आरोप-प्रत्यारोप तथा महाराष्ट्र एवं झारखंड विधानसभा के चुनाव के मद्देनजर फिर से रेवड़ी व वादों की घोषणाओं में व्यस्त हैं। उन्होंने कहा कि जन समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय भाजपा व कांग्रेस ज्यादातर आरोप-प्रत्यारोप की नकारात्मक राजनीति में ही व्यस्त हैं तथा चुनाव में मिथ्या प्रचारों व वादों की भरमार लगा रखी है।

जेल के बाहर दिनदहाड़े चली गोली, आदतन अपराधी घायल

रायपुर (आरएनएस)। राजधानी रायपुर में आज उस वक्त हड़कंप मच गया, जब सुरक्षा व्यवस्था को धता बताते हुए अज्ञात हमलावरों ने केन्द्रीय जेल के बाहर एक आदतन अपराधी पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। इस गोलीकांड में साहिल खान नामक युवक घायल हो गया, बताया जाता है कि घायल युवक को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उसका उपचार चल रहा है।

सूत्रों ने बताया कि यह मामला पुराने गैंगवार से जुड़ा है। घायल अपराधी साहिल खान की मां ने मीडिया को बताया कि करीब 5-6 माह बाद वे सभी परिजन जेल में बंद अपने छोटे बेटे से मुलाकात करने आए थे। उनके साथ साहिल उसकी पत्नी जेल में बंद भाई की पत्नी और अन्य महिलाएं साथ थी। मुलाकात कर जैसे ही बाहर निकले जेल परिसर में ही तीन युवक आए, और साहिल पर फायरिंग शुरू कर दी। इसमें साहिल के गले के बीचों-बीच गोली जा लगी। उसे तत्काल अंबेडकर अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती किया गया। मां का कहना है कि जिसने फायरिंग की उसे और जिसने करवाया उसे भी पहचानते हैं। लेकिन नाम नहीं बताया। जेल परिसर में हुई इस फायरिंग के बाद इलाके में हडकंप मच गया है। घटना के बाद एडिशनल एसपी लखन पटेल गंज पुलिस के दल बल के साथ वहां पहुंच गए। पुलिस जेल परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों के जरिए आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

छत्तीसगढ़ राज्योत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुतियां, लोक गायक लक्ष्मण मस्तुरिहा के गीत पर झूमे

तीजा-पोरा, हरेली, गौरी-गौरा पूजा के साथ ही सुवा-करमा नृत्य की शानदार प्रस्तुति से दर्शक मंत्रमुग्ध हुए

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस राज्योत्सव 2024 का भव्य शुभारंभ आज छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति से हुआ। नवा रायपुर के राज्योत्सव ग्राउण्ड के मुख्य मंच से छत्तीसगढ़ी कलाकारों के दल ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दी और दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। तीन दिवसीय राज्योत्सव के आयोजन को लेकर मेला स्थल को शानदार ढंग से सजाया गया है। हजारों की संख्या में लोग यहां आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद और प्रदर्शनी देखने के लिए पहुंचे।

राज्योत्सव 2024 का शुभारंभ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इस अवसर पर उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने की। कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री द्वय श्री अरूण साव एवं श्री विजय शर्मा सहित अन्य मंत्रिगण, सांसद, विधायक एवं अन्य जनप्रतिनिधि सहित हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ राज्योत्सव के शुभारंभ के पूर्व से ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों का दौर शुरू हो गया। सुप्रसिद्ध छत्तीसगढ़ी लोक गायक लक्ष्मण मस्तुरिहा के गीत और भजन की प्रस्तुति ने खूब समां बांधा। मस्तुरिहा और साथियों द्वारा गाये गीत और भजन पर दर्शक झूमने लगे। रिखी क्षत्रीय की टीम ने छत्तीसगढ़ राज्य में अलग-अलग महीनों में आयोजित होने वाले तीज-त्यौहार एवं लोकपर्व आधारित कार्यक्रमों की संवाद, गीत एवं नृत्य के माध्यम से शानदार प्रस्तुति दी। उनकी टीम ने तीजा-पोरा, जंवारा, हरेली, गौरी-गौरा पूजा के साथ ही सुवा नृत्य एवं करमा नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। रिखी क्षत्रीय की टीम की सभी प्रस्तुतियों का दर्शकों ने ताली बजाकर सराहा। इससे पूर्व रजनी रजक की लोकगाथा पर आधारित ढोला-मारू की प्रस्तुति रेवा-पेरवा जादूगरनी की कहानी को गायन विधा में तथा महेन्द्र चौहान एवं साथी द्वारा प्रस्तुत आदिवृंदम एवं चन्द्रभूषण वर्मा की प्रस्तुति को दर्शकों ने खूब सराहा।

इस चुनाव में दक्षिण में नया इतिहास रचेंगे : दीपक बैज

दक्षिण से आकाश शर्मा प्रचंड मतो से चुनाव जीतेंगे

रायपुर (आरएनएस)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि अबकी बार हम दक्षिण में नया इतिहास रचेंगे। पूरे दक्षिण विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के पक्ष में वातावरण बना हुआ है। जनता के आर्शिवाद से यहां से कांग्रेस के प्रत्याशी आकाश शर्मा चुनाव जीतेंगे। दक्षिण विधानसभा का चुनाव में साय सरकार के 11 माह के कुशासन के खिलाफ जनता मतदान करने को तत्पर है। 11 माह में राज्य की बिगड़ती कानून व्यवस्था भाजपा की वायदाखिलाफी, सरकार का कुशासन बड़ा चुनावी मुद्दा होगा। केई सरकार 11 माह के अल्प समय में ही इतनी ज्यादा अलोकप्रिय साबित हो सकती है। इसका उदाहरण छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार है। जनता भाजपा सरकार से ऊब चुकी है, अत: जनमानस भाजपा के खिलाफ है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी आकाश शर्मा प्रचंड मतो से चुनाव जीतेंगे। कांग्रेस का प्रत्याशी युवा है, उनको व्यापक जनसमर्थन मिल रहा है। वे जुझारू है। इसके विपरीत भाजपा प्रत्याशी पर सांसद रहते हुये निष्क्रियता का तमगा लगा हुआ है। रायपुर की जनता ने सांसद के रूप में सुनील सोनी को अवसर दिया था लेकिन वे जन आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाये।

संक्षिप्त समाचार

रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव : सामान्य प्रेक्षक श्रीमती जी. रेखा रानी के समक्ष ईवीएम एवं वीवी पैट का हुआ द्वितीय रेण्डमाईजेशन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर दक्षिण विधानसभा उपनिर्वाचन 2024 के लिए सामान्य प्रेक्षक श्रीमती जी. रेखा रानी के समक्ष एवं राजनैतिक दलों की उपस्थिति में ईवीएम एवं वीवी पैट मशीनों का रेडक्रॉस सभाकक्ष में द्वितीय रेण्डमाईजेशन किया गया। रेण्डमाईजेशन के पश्चात फाईनालाईज्ड कए गये ईवीएम बैलेट यूनिट, कंट्रोल यूनिट, वीवी पैट मशीन में उल्लेख आईडी नंबर सहित सूची राजनैतिक दल के प्रतिनिधियों को उपलब्ध कराई गई। रेण्डमाईजेशन की प्रक्रिया में रायपुर दक्षिण विधानसभा उपनिर्वाचन 2024 अंतर्गत बीयू 719, सीयू 379 एवं वीवीपैट 425 का द्वितीय रेण्डमाईजेशन किया गया। इस अवसर पर रिटर्निंग ऑफिसर श्री पुष्पेंद्र शर्मा, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री उमाशंकर बंदे, सहायक कलेक्टर सुश्री अनुपमा आनंद उपस्थित थे।

राजनैतिक दल के प्रत्याशी एवं प्रतिनिधियों की रही उपस्थिति

उप मुख्यमंत्री अरुण साव बिलासपुर में राज्योत्सव में होंगे मुख्य अतिथि

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव 5 नवम्बर को बिलासपुर जिला मुख्यालय में आयोजित राज्योत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। वे 5 नवम्बर को दोपहर दो बजे रायपुर से सड़क मार्ग द्वारा बिलासपुर के लिए रवाना होंगे। वे शाम चार बजे बिलासपुर स्थित अपने शासकीय निवास पहुंचेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री साव शाम पांच बजे बिलासपुर के छठ घाट में अरपा आरती में शामिल होंगे। वे शाम पौने छह बजे छठ घाट से पुलिस परेड ग्राउंड के लिए प्रस्थान करेंगे। वे शाम छह बजे पुलिस परेड ग्राउंड में आयोजित छत्तीसगढ़ राज्योत्सव-2024 में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। श्री साव रात आठ बजे बिलासपुर से रायपुर के लिए रवाना होंगे। वे रात दस बजे वापस रायपुर पहुंचेंगे।

गजानन अग्रवाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में नशामुक्त अभियान के तहत संगोष्ठी का आयोजन

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देश में जिले के युवाओं को नशा से बचाने हेतु नशा मुक्त भारत अभियान अंतर्गत नई दिशा कार्यक्रम के माध्यम से लगातार जागरूकता शिविर का आयोजन किए जा रहे है। इसी तारतम्य में भाटापारा स्थित गजानन अग्रवाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 221 छात्र -छात्राओं ने भाग लिया। शिविर में समाज कल्याण विभाग के उपसंचालक अरविंद गेडाम ने बताया कि नशा एक ऐसी बुराई है जो हमारे समूल जीवन को नष्ट कर देती है। नशे की लत से पीडित व्यक्ति परिवार के साथ समाज पर बोझ बन जाता है। सरकार इन पीड़ित को नशे के चुंगल से छुडाने के लिए नशा मुक्ति अभियान चलाती है,शराब और गुटखें पर रोक लगानें के प्रयास करती है। नशा एक अभिशाप है। यह एक ऐसी बुराई है, जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशे के लिए समाज में शराब गांजा, भांग, अफिम, जर्दा, गुटखा, तम्बाकू और घुमपान सहित चरस, स्मैक, कोकिन, ब्राउन शुगर जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है। नशे से छुटकारें हेतु नशा मुक्ति केन्द्र भी संचालित किया जा रहा है जिसमें रहने की व्यवस्था, दवाईयों की व्यवस्था, उचित मनोचिकित्सकों की व्यवस्था भी की गई है एवं नशामुक्ति केन्द्र में प्रतिदिन योगाभ्यास, पूजा पाठ एवं सामाजिक कार्यक्रम कराया जाता है।

प्रभारी मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल होंगे राज्योत्सव में मुख्य अतिथि

पंडित चक्रपाणी शुक्ल हाई स्कूल मैदान में जिला स्तरीय राज्योत्सव आज

सुप्रसिद्ध छत्तीसगढी गायिका कविता वासनिक के सुरों से सजेगी सांस्कृतिक संध्या

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिले के प्रभारी एवं स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल के मुख्य आतिथ्य में छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस राज्योत्सव-2024 का जिला स्तरीय समारोह 5 नवंबर को सायं 6 बजे से बलौदाबाजार स्थित पण्डित चक्रपाणी शुक्ल हाई स्कूल मैदान में होगा। राज्योत्सव समारोह की अध्यक्षता राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा करेंगे। समारोह में रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल, जांजगीर-चाम्पा सांसद श्रीमती कमलेश जांगड़े, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल, विधायक भाटापारा इंद्र साव विधायक कसडोल संदीप साहु, विधायक बिलाईगढ़ श्रीमती कविता प्राण लहरे, पूर्व विधायक भाटापारा शिवरतन शर्मा, पूर्व विधायक बिलाईगढ़ डॉ. सनम जांगड़े, जिला पंचायत अध्यक्ष राकेश वर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष चित्तावर जायसवाल, जनपद अध्यक्ष श्रीमती सुमन योगेश वर्मा एवं छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की सदस्य श्रीमती लक्ष्मी वर्मा विशिष्ट अतिथि होंगे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम व विभागीय स्टॉल की होगी धूम : राज्योत्सव में सुप्रसिद्ध छत्तीसगढी गायिका श्रीमती कविता वासनिक के सुर लहरी से सांस्कृतिक संध्या सजेगी।इसके साथ ही दुलदुला की संस्था छत्तीसगढी रंगोली कार्यकम अंतर्गत मनहरण साहु एवं साथियों की प्रस्तुति ,करमदा की लोक सांस्कृतिक संस्था झाँपी अंतर्गत मणिसिंह ठाकुर एवं साथी,कोहरौद के बाबा के दीवाना पंथी पार्टी अंतर्गत मनोज मार्कण्डेय एवं साथी तथा स्कूली बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत की जाएगी। राज्योत्सव में लगभग 21 विभागों द्वारा विभागीय उपल्बधियों पर आधारित आकर्षक स्टॉल लगाए जाएंगे। इस अवसर पर विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को लाभान्वित भी किया जाएगा।

कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा में पुलिस सहायता केन्द्र का पंथ श्री उदितमुनिनाम साहब ने फीता काट कर किया शुभारंभ

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। अपराध नियंत्रण,कानून एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु जिले में स्थित कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा में नवीन पुलिस सहायता केंद्र का संचालन प्रारंभ किया गया है। जिसका शुभारंभ आज पंथ श्री उदितमुनिनाम साहब के करकमलों द्वारा फीता काट कर किया गया। इस मौके पर पूर्व विधायक भाटापारा शिवरतन शर्मा, कलेक्टर दीपक सोनी, पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में कबीर अनुयायी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

इस मौके पर पंथ श्री उदितमुनिनाम साहब द्वारा सहायता केंद्र मे विधिवत रोजनामचा लेखन कार्य प्रारंभ कर पुलिस सहायता केंद्र कबीर धर्मनगर (दामाखेड़ा) का विधिवत कार्य प्रारंभ किया गया। पुलिस सहायता केंद्र कबीर धर्मनगर में सहायक उप निरीक्षक माधो प्रसाद साहू को प्रभारी अधिकारी बनाया गया है। इसके साथ ही प्रधान आरक्षक सुख सागर मरावी, 03 आरक्षक सहित कुल 05 पुलिस स्टाफ की तैनाती पुलिस सहायता केंद्र कबीर धर्मनगर (दामाखेड़ा) में की गई है।

गौरतलब है कि कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा कबीर पंथ के प्रमुख आस्था का मुख्य केंद्र है। ग्राम दामाखेड़ा में कबीर पंथ आश्रम विद्यमान है जिसमें कबीर पंथ के वंशाचार्य श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब एवं उनका परिवार भी निवास करते है। उक्त स्थल का दर्शन करने प्रतिदिन दर्शनार्थियों का आना-जाना लगा रहता है। साथ ही प्रत्येक वर्ष दामाखेड़ा में 15 दिवसीय मेला का भी आयोजन किया जाता है,जिसमें हर दिन चौका आरती एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठान कार्यक्रम होते रहते हैं। इस दौरान मेला कार्यक्रम में विभिन्न प्रदेशों के साथ-साथ विदेश से भी कई लोग दर्शनार्थ कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा पहुंचते हैं तथा प्रतिदिन मेले में हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण देव का कांग्रेस पर करारा प्रहार

हर बड़ी अपराधिक घटना के पीछे कांग्रेस का हाथ, छत्तीसगढ़ में अशांति फैलाने कांग्रेस कर रही साजिश : किरण देव

रायपुर (आरएनएस)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने प्रदेश में बढ़ते अपराध, तनाव और अराजकता के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराते हुए कांग्रेस के लोगों की कारगुजारियों को सामने रखा है और कहा है कि एक ओर जहाँ छत्तीसगढ़ प्रदेश अपना 25वाँ राज्योत्सव मना रहा है, वहां बड़े दुख और चिंता के साथ कांग्रेस की कारगुज़ारियों को आपके बीच रखने की विवशता है। श्री देव ने साफ-साफ लफ्जों में आरोप लगाया कि प्रदेश में जहां भी अपराध और तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है, उसकी जड़ में कांग्रेस है। कांग्रेस जानबूझकर छत्तीसगढ़ को आग में झोंकना चाहती है। इसलिए पहले खुद अपराध को अंजाम देती है, षड्यंत्र रचती है और फिर उस मुद्दे पर सरकार को घेरने में उसके बड़े नेता लग जाते हैं।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष देव ने सोमवार को एकात्म परिसर स्थित भाजपा कार्यालय में आहूत पत्रकार वार्ता में स्पष्ट आरोप लगाया कि यह कांग्रेस की राष्ट्रीय स्तर पर तय हुई साज़िश के तहत हो रहा है कि समूचे देश-प्रदेश को अराजकता में धकेल दो, फिर चुनी हुई सरकारों को अस्थिर करो। भय और आतंक का वातावरण निर्माण करो। इसी साजिश की कड़ी में छत्तीसगढ़ में भी हर आतंक और अपराध के पीछे कांग्रेस का ही खूनी पंजा है। लोकसभा चुनाव में मिली करारी हार और छत्तीसगढ़ समेत तमाम राज्यों में हुए सफ़ाए से कांग्रेस अब जनता के प्रति बदले की भावना से भरी हुई है। वह समाज में अशांति फैलाने का काम कर रही है। श्री देव ने कहा कि अभी दामाखेड़ा में कबीर पंथ ही नहीं, समूचे प्रदेश की आस्था के केंद्र पर हमला करने वाला भी कांग्रेस का सक्रिय कार्यकर्ता निकला है। इसका प्रमाण स्वयं प्रकाश मुनि साहेब के फेसबुक के पोस्ट में है। प्रकाशमुनि साहेब ने अपने फेसबुक पोस्ट में इस बात का उल्लेख किया है कि इस घटना में भी अपराधी सरपंच पति कांग्रेस पार्टी का ही कार्यकर्ता है। प्रकाशमुनि साहब ने स्पष्ट यह आरोप लगाया है कि दामाखेड़ा की घटना को राजनीतिक रंग दिया जा रहा है। कांग्रेस के इस कृत्य की जितनी भर्त्सना की जाए, कम है।

उद्योग मंत्री देवांगन 5 व 6 नवम्बर को कोरबा एवं बिलासपुर में आयोजित कार्यक्रम में होंगे शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश के वाणिज्य उद्योग एवं श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन 05 नवम्बर मंगलवार एवं 06 नवम्बर बुधवार को कोरबा एवं बिलासपुर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे। मंत्री श्री देवांगन 05 नवम्बर मंगलवार को चारपारा कोहड़िया कोरबा स्थित निवास से सायं 6.45 बजे डॉ भीमराव अम्बेडकर ओपन थियेटर घंटाघर चौक कोरबा के लिए प्रस्थान कर सायं 07 बजे वहां आयोजित राज्योत्सव 2024 समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे। मंत्री श्री देवांगन 06 नवम्बर बुधवार को चारपारा कोहड़िया कोरबा स्थित निवास से सुबह 10 बजे बिलासपुर के लिए प्रस्थान करेंगे। दोपहर 12 बजे रेल्वे स्टेशन बिलासपुर पहुंचकर श्री रामलला दर्शन योजना के अंतर्गत यात्रियों को अयोध्या रवाना किए जाने के फ्लैग ऑफ कार्यक्रम में शामिल होंगे। कार्यक्रम पश्चात दोपहर 12.45 बजे बिलासपुर से प्रस्थान कर दोपहर 2.30 बजे शंकर नगर रायपुर पहुंचेंगे।

चौबेबांधा पुल के पास आधी सड़क पर पेड़ ने जमाया कब्जा, बड़ी गाड़ी आने पर राहगीरों को रूककर करना पड़ता है इंतजार

राजिम (विश्व परिवार)। पीडब्ल्यूडी विभाग की अनदेखी के चलते रायपुर धमतरी और गरियाबंद जिला के राहगीरों को संकट से गुजरना पड़ रहा है। जिसके चलते आवागमन बाधित हो रहा है। बड़ी गाड़ियां आने पर यात्रियों को उनके निकलने तक रुकना पड़ रहा है यदि पेड़ को नहीं हटाया गया तो कभी भी कोई बड़ी दुर्घटना होने से इनकार नहीं किया जा सकता है। जी हां हम बात कर रहे हैं गरियाबंद जिला को धमतरी जिला से जोड़ने वाले राजिम परसवानी चौबेबांधा पुल से महज 30 फीट की दूरी पर धमतरी जिला के छोर में साल भर पहले से एक बबुल का बड़ा सा पेड़ नीचे गिर गया है। गिरने के बाद भी वह वृक्ष जीवित है और अपने तने के माध्यम से पूरे सड़क के आधे हिस्से पर कब्जा जमाए हुए हैं दिनों दिन इनका आकार बढ़ते जा रहा है और रोड की चौड़ाई छोटी होती जा रही है स्थितियां अत्यंत गंभीर हो रही है। मजे की बात यह है कि यहां से महज ढाई से 3 किलोमीटर की दूरी पर राजिम शहर में पीडब्ल्यूडी विभाग का उप संभागीय कार्यालय है लेकिन यहां के अधिकारी और कर्मचारियों को इस सड़क मार्ग के हाले दिल देखने की फुर्सत नहीं है। तभी तो गिरे हुए इस पेड़ के तने को हटाया नहीं गया है। वैसे भी सड़क जर्जर है ऊपर से सड़क के आधे हिस्से पर वृक्ष का अतिक्रमण पर लोग संबंधित पीडब्ल्यूडी विभाग को जरूर कोस रहे हैं। वहीं पर उपस्थित कुछ लोगों से बात किया तो उन्होंने कहा कि यह संबंधित विभाग की उदासीनता को सिद्ध करती है। यदि विभाग के अफसरों के गैर जिम्मेदार आना हरकत है। ऐसा नहीं है कि उन्हें पता नहीं होगा क्योंकि यह में रोड है जहां 24 घंटे आवागमन बद्स्तुर जारी रहता है। धमतरी जिला के एक बड़ी आबादी राजिम शहर प्रतिदिन आना जाना करते हैं। गरियाबंद जिला के लाखों लोग इसी मार्ग का उपयोग करते हुए धमतरी जिला और रायपुर जिला के गांव और शहरों में आवागमन करते हैं। स्कूल कॉलेज के छात्र-छात्राएं शहर में विद्या अध्ययन के लिए आते हैं। किसान, मजदूर सभी दिन रात हर समय कोई पैदल तो कोई साइकिल बाइक या फिर चार पहिया वाहनों का उपयोग करते हुए यात्रा करते हैं। बावजूद इसके आंख मूंदना पीडब्ल्यूडी विभाग और सरकार के कार्य प्रणाली पर सवालिया निशान लगाती है। यहां से ढाई तीन किलोमीटर की दूरी पीडब्ल्यूडी विभाग का उप संभागीय कार्यालय है और यहां से मात्र कुछ ही दूरी पर राजिम परसवानी चौबेबांधा पुल स्थित है। खास बात है कि इन सब के होने के बावजूद भी ना विभाग को सड़क की चिंता है ना राहगीरों की।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर** कॉलोनी, रायपुर में निर्मित **फ्लैट (एल.आई.जी.) फेस - II** भवन योजना के अंतर्गत, दुकानों/भूखण्डों/भवनों में से भूखण्ड/भवन क्रमांक ब्लाक - I मकान - I **भू-तल कबीर नगर, श्री राम नारायण शुक्ला पिता श्री हरी शंकर शुक्ला** को भाड़ाक्रय/पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **15.03.2014** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक **17.10.2024** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री शेख सफीकुल इस्लाम पिता श्री शेख काशिमुद्दीन** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **वीर सावरकर नगर हीरापुर** कॉलोनी, रायपुर में निर्मित EWS भवन योजना के अंतर्गत, दुकानों/भूखण्डों/भवनों में से भूखण्ड/भवन क्रमांक ब्लाक - **EWS - 620 श्री मनोद मसंद पिता - स्व. श्री साजन दास मसंद** को भाड़ाक्रय/पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **20.01.2021** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक **30.06.2024** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री चंदन कुमार झा पिता कामेश चंद झा** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि दीनदयाल आवास योजनांतर्गत सड्डू रायपुर में स्थित **भवन क्रमांक एल.आई.जी.-1189, श्री भूषण लाल साहू पिता श्री विश्राम साहू** के नाम पर इस कार्यालय का नामांतरण आदेश क्रमांक-201 दिनांक 17.11.2017 द्वारा नामांतरित किया गया है। नामांतरी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में दिनांक 22.09.2017 को विक्रय विलेख पंजीकृत उपरांत नामांतरी **श्री भूषण लाल साहू पिता श्री विश्राम साहू** की मृत्यु दिनांक 03.01.2024 को हो जाने के कारण उनके **नामिनी/धर्मपत्नि श्रीमती तुलसी साहू पति स्व. श्री भूषण लाल साहू निवासी म.नं.- 22/318, जोरापारा, जवाहर नगर, रायपुर जिला रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, सहमति पत्र, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत कर उक्त भवन को अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया, जिसके अनुसार नामांतरण किया जाना है।

अतः उक्त भवन के नामांतरण के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कालोनी खिलौरा, जिला रायपुर,** में स्थित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत निर्मित भवन **क्र. एल.आई.जी -256, श्री कन्हैया लाल पाल पिता श्री पंचम पाल निवासी : एल.आई. जी-256, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी खिलौरा रायपुर जिला-रायपुर (छ.ग.)** के नाम पर इस कार्यालय से नामांतरण आदेश क्रमांक 494 दिनांक 21.02.2023 के माध्यम से नामांतरित है। आबंटी द्वारा भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 25.07.2013 को सेलडीड निष्पादित कराने के उपरांत पत्र कमांक 1629 दिनांक 31.12.2013 को आधिपत्य आदेश जारी किया गया है। नामांतरित आंबटी **श्री कन्हैया लाल पाल पिता श्री पंचम पाल,** उक्त भवन को विक्रय अनुमति हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन को **क्रेता (1) श्री उमेश कुमार कुम्हार पिता श्री सुग्रीव प्रसाद प्रजापति (2) श्रीमती प्रीति प्रजापति पति श्री उमेश कुमार कुम्हार दोनो निवासी: वार्ड नं.-09, पीपल पारा, शनि मंदिर रोड़ सुरपा, जिला-दुर्ग (छ.ग.)** के पक्ष में विक्रय हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन/फ्लैट के विक्रय करने हेतु अनुमति प्रदान करने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यया नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15573/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 04-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15573
वार्ड का नाम-12- महात्मा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR225F0130A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BIHARI LAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O BHAGLA RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री प्रहलाद साहू** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता श्री बिहारी लाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दूबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15458/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 04-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15458
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227R0126A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GOPI SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O DHANESH SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **भागवती साहू** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - स्व. श्री गोपीराम साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दूबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15572/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 04-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15572
वार्ड का नाम-12- महात्मा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR225F00130** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BIHARI LAL SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O BHAGLA RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री ईश्वर साहू** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - श्री बिहरी लाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानंद दूबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15561/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 04-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15561
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR332B00168** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **HANIF SHUKRULLA ANSARI** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O SHAKRULLA P ANSARI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती संगीता अग्रवाल** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री विरेन्द्र कुमार अग्रवाल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दूबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15575/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 04-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15575
वार्ड का नाम-12- महात्मा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR225F0130B** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BIHARI LAL SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O BHAGLA RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री चन्द्र प्रकाश साहू** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - श्री बिहारी लाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दूबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15559/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 04-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15559
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801P0538A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHARDA DEVI BHARTI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MUNNI LAL BHARTI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANIL YADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VIRENDRA PRATAP YADAV** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

बोनस नहीं मिलने से नाराज मजदूरों ने काम बंद कर किया मानिकपुर कार्यालय के सामने प्रदर्शन

कोरबा(विश्व परिवार)। मानिकपुर खदान में कार्यरत ठेका कर्मियों ने बोनस नहीं मिलने समेत अन्य मुद्दों को लेकर कामबंद महाप्रबंधक कार्यालय समक्ष प्रदर्शन किया। लगभग तीन घंटे बाद समझाइश दिए जाने पर आंदोलन समाप्त हुआ। शाम को प्रतिनिधि मंडल के साथ बैठक कर प्रस्ताव तैयार कर मुख्यालय भेजने पर सहमति बनी। साऊथ ईस्टर्न कोलफिल्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) की खदानों में अनेक कार्य ठेका पद्धति से कराए जा रहे है। इन ठेकेदारों के कार्य एक वर्ष में समाप्त हो जाता है, ऐसी स्थिति में इन ठेकेदारों के अधीन कार्यरत मजदूरों को बोनस समेत अन्य राशि नहीं मिल पाती है। दिवाली में बोनस नहीं मिलने पर काफी संख्या में मजदूर मानिकपुर महाप्रबंधक कार्यालय पहुंच गए। जानकारी मिलने पर मानिकपुर पुलिस व अधिकारी स्थल पर पहुंचे और आंदोलनकारियों से चर्चा किए। मजदूरों ने कहा कि 10-12 वर्षों से मानिकपुर के सीएचपी में आपरेशन, मेंटेनेंस बेल्ट क्लिनिंग आदि, टी लाइन व खदान में बिजली, पंप आपरेटिंग वाहन चालक आदि का काम करते आ रहे हैं। वर्तमान में हम विभिन्न ठेकेदारों के माध्यम से काम कर रहे हैं। ईपीएफ पेंशन स्कीम) एवं हाईपावर कमेटी की दर से वेतन भुगतान किया जाना है जो कि कार्यालीन रिकार्ड में खाते में तो दिया जा रहा, किन्तु इन सभी सुविधाओं का लाभ तो दूर की बात है। प्रबंधन ने कहा कि बोनस की मांग जायज है, पर ठेकेदार काम खत्म कर वापस जा चुका है और नए ठेकेदार पुराने का भुगतान नही कर सकते। इसके लिए प्रस्ताव तैयार कर मुख्यालय भेजा जाएगा, ताकि समस्या का समाधान किया जा सके।

भाई दूज: कोरबा पुलिस ने जारी की एडवायजरी

कोरबा(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी ने भाई दूज के पवित्र पर्व पर जनता को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि इस अवसर पर बहनें अपने भाई की लंबी आयु और सुख समृद्धि के लिए अपने भाई के घर जा उनके साथ मिलकर भाई दूज का त्यौहार मनाती हैं। सजग कोरबा तहत त्योहार धूमधाम एवं शांतिपूर्ण मनाने की अपीलकोरबा पुलिस ने जगह-जगह पर प्वाइंट लगाने के साथ विभिन्न रास्तों पर सडक दुघर्टनाओं, महिला संबंधी अपराधों पर अंकुश लगाते हुए शांति सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने हेतु पहली बार महिला एवं पुलिस अधिकारियों की 12 पिंक पेट्रोलिंग संभावित रास्तों पर तैनात रहेगी। क्या करेंचारपहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट पहनकर वाहन चलाएं।दुपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहन कर वाहन चलाएं।बच्चों पर हर समय निगरानी रखें।क्या न करेंनशीले पदार्थ का सेवन करके वाहन न चलाएं।दो पहिया वाहन में तीन सवारी न चलें।यातायात ट्रैफिक सिग्नल को न जंप करें।भीड़भाड़ वाले स्थान पर जाते समय अपने सामानों का ध्यान रखें।स्कूटी एवं मोटरसाइकिल के डिक्की में महत्वपूर्ण एवं कीमती सामान को न रखें।

एसआई भर्ती सूरजपुर के चयनित अभ्यर्थियों को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर ने दी शुभकामनाएं

गोपाल सिंह विद्रोही/ सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-हाल ही में एसआई परीक्षा परिणाम जारी किए गए है जिसमें सूरजपुर जिले के कई अभ्यथियों का चयन हुआ है जो सूरजपुर जिले के लिए बड़े ही गर्व की बात है। सोमवार, 04 नवम्बर 2024 को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने चयनित हुए सूरजपुर के अभ्यर्थी राहुल गौतम, ज्योति सिंह पुहुप, कमलेश्वर प्रजापति, अनूक साय एवं साईबर सेल में पदस्थ आरक्षक संतलाल यादव को एसआई में सलेक्ट होने पर शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना दी और उन्हें मार्गदर्शन भी दिया। इस अवसर पर एसएसपी श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने अभ्यर्थियों की मेहनत को सराहा और कहा कि आपके बुलंद हौसले और मुकाम हासिल करने के जज्बे से ही आपको सफलता मिली है। ट्रेनिंग के दौरान आने वाली समस्या एवं निदान के बारे में जानकारी साझा किया। उन्होंने कहा कि सब इंस्पेक्टर से भर्ती होकर आप वरिष्ठ पदों तक जा सकते हैं। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के दिशा निर्देश में बेहतर कार्य दक्षता का प्रदर्शन करेंगे तो आपको पुलिस विभाग में अच्छा पहचान मिलेगा।

अग्रसेन स्टेडियम ग्राउंड के राज्योत्सव कार्यक्रम के संगीत संध्या में घनश्याम महानंद एवं स्तुति जायसवाल देंगे मनमोहक प्रस्तुति

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस समारोह 2024 के अवसर पर जिले के अग्रसेन स्टेडियम ग्राउंड पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। 05 नवंबर मंगलवार को 04 बजे से कार्यक्रम का आयोजन होना है। रंगारंग कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए सुप्रसिद्ध लोक पार्श्व गायक श्री घनश्याम महानंद एवं सुश्री स्तुति जायसवाल भी कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। कला जगत में श्री घनश्याम महानंद को ब्लैक डायमंड के नाम से जानते हैं। आडियो विडियो में लगभग 500 गीतों में अपनी आवाज दे चुके है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, हल्बी, गोंडी, उडिया, संबलपुरी तथा भोजपुरी भाषाओं में गीत गाया है। कई राष्ट्रीय स्तर के टी.वी. चौनलों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी है। वर्तमान में सोशल मिडिया प्लेटफार्म, यूट्यूब के माध्यम से लगातार छत्तीसगढ़ी संस्कृति, लोक परम्पराओं से जुड़े गीत संगीत की प्रस्तुति कर रहे है। लोक गीत के अलावा गजल, भजन, सुफी, गायकी में भी अपनी छाप छोड़ चुके है। मैनपाट महोत्सव, राजिम महोत्सव, भोरमदेव महोत्सव, बारसुर महोत्सव, अरपा महोत्सव, चित्रकुट महोत्सव, तातापानी महोत्सव, ज्वाजल्य देव महोत्सव एवं राज्योत्सव जैसे सम्मानित मंचों में अपनी प्रस्तुति दे चुके है। श्री घनश्याम महानंद की विशेषता रही है कि अपने गीतो में उनके द्वारा आमजन को जागरूक करने के लिए सम सामायिक विषय व सामाजिक मुद्दो पर जैसे कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, नशा मुक्ति, छत्तीसगढ़ी भाषा को बढ़ावा देने वाले गीतों को व अपने संगीत में स्थान देते है। इसके साथ ही मंच में सुश्री स्तुति जायसवाल के द्वारा भी संगीत संध्या में अपनी मधुर आवाज से गीतों की प्रस्तुति की जाएगी। सुश्री स्तुति जायसवाल यंग स्टार (2017) की विनर रह चुकी है। उन्होंने लव मी इंडिया (2018) में भाग लिया था, जिसमें वह रनअप थी। इसके साथ ही उनके द्वारा माता मावली मेला, मैनपाट, कुदरगढ़, रामगढ़, तातापानी महोत्सव इत्यादि में भी कला का प्रदर्षन किया है।

स्मार्ट मीटर लगाने के नाम पर रकम की मांग, विद्युत विभाग ने किया सतर्क

कोरबा(विश्व परिवार)। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण ने सभी राज्यों में स्मार्ट डिजिटल मीटर लगाने की योजना बनाई है। वर्तमान में सभी जगहों पर पोस्ट पेड मीटर लगा हुआ है। जिसे बदलकर नया स्मार्ट मीटर लगाने का काम जीनस कंपनी द्वारा बिलासपुर क्षेत्र के कोरबा, मुंगेली, पेण्ड्रारोड़ तथा बिलासपुर शहरी एवं ग्रामीण संभागों में निःशुल्क किया जा रहा है। इस योजना के तहत क्षेत्र के लगभग 8 लाख उपभोक्ताओं के मीटर बदले जाएंगें। जीनस कंपनी एवं विद्युत विभाग को जानकारी मिली है कि कुछ लोगों द्वारा स्मार्ट मीटर बदलने के एवज में उपभोक्ताओं से रूपयों की मांग की जा रही है, जो कि पूर्णतरू गलत कृत्य है। जीनस कंपनी अथवा विद्युत विभाग द्वारा इस कार्य हेतु किसी भी प्रकार की राशि निर्धारित नही की गई है, यह कार्य पूर्ण रूप से निरूशुल्क किया जाना है। छत्तीसगढ़ पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड बिलासपुर क्षेत्र के मुख्य अभियंता ए.के. अम्बस्ट ने सभी उपभोक्ताओं से अनुरोध किया है कि यदि किसी व्यक्ति अथवा कर्मचारी द्वारा स्मार्ट मीटर बदलने के एवज में अनाधिकृत रूप से पैसों की मांग की जाती है, तो संबंधित व्यक्ति का नाम, पता व मोबाइल नंबर की सूचना तत्काल ही जीनस कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर प्रिंस शर्मा के मोबाईल नंबर 9773358468 या विद्युत विभाग के नजदीकी कार्यालय में दे सकते हैं।

बोलेरो ने मारी ठोकर ट्रक कुचलते चलते हुए आगे निकल गए युवक की दर्दनाक मौत

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- सूरजपुर जिले के जयनगर पुलिस थाना अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग 43 पर आज ग्राम पंचायत रविंद्र नगर के निवासी राकेश राय पिता सुभाष राय सामान लेने के लिए बनारस रोड से अंबिकापुर गए थे अंबिकापुर से आपसी में ,, चठिरमा बनारस रोड चंद्रकला पेट्रोल पंप से एक बोलेरो क्रमांक सीजी 15डी जे 3164 निकली और राकेश राय की मोटरसाइकिल को ठोकर मार दी राकेश राय मोटरसाइकिल सहित लेकर गिर गए वही बनारस से अंबिकापुर जा रहा ट्रक क्रमांक बीअर24 सीजी 6989 ने राकेश राय को रगड़ते हुए आगे बढ़ गया जहां युवक की दर्दनाक मौत हो गई पुलिस मौके पर पहुंचकर जान पड़ता कर रही है वही दोनों बहनों को जप्त कर ली है।

बुजुर्ग की हत्या कर शव को जलाने वाला शातिर सुपारी किलर आरोपी गिरफ्तार

थाना तमनार जिला रायगढ के डबल मर्डर के भी प्रकरण में भी था फरार।

थाना डभरा में डबल मर्डर मामले में भी जा चुका है जेल।

चौकी फगुरम क्षेत्र का था हिस्ट्री शीटर बदमाश।

सक्ती/मालखरौदा(विश्व परिवार)। 29.02.2024 को रात्रि में ग्राम अण्डी में मामले के मृतक भरत लाल भारद्वाज पिता स्व0 साध राम भारद्वाज उम्र 67 वर्ष साकनि अण्डी का ग्राम अण्डी में ही मृतक का जोगी तालाब किनारे उसके मकान में किसी अज्ञात व्यक्ति के द्वारा उसके सिर चेहरे में चोट पहुंचाकर उसका हत्या कर दिया गया था जिस पर से थाना मालखरौदा में अपराध कमॉक 98/2024 धारा 302,201 भादवि का अपराध पॅजीबद्ध विवेचना की जा रही थी विवेचना के दौरान मामले में संदेही ग्राम अण्डी के सरपंच पति विजय कुमार भारद्वाज पिता स्व0 तिहारू राम भारद्वाज उम्र उम्र 38 वर्ष साकिन अण्डी से पूछताछ पर बताया गया कि मामले का मृतक भरत लाल भारद्वाज से जमीन सबंधी विवाद होना उसी बात पर मृतक के द्वारा पूर्व में उसके साथ लडाई-झगडा होना उसी बात को लेकर भरत लाल का हत्या करने के लिये चौकी फगुरम क्षेत्र का गुण्डा बदमाश नंद कुमार लहरे तथा हिमाँशु खुटे निवासी जमगहन को 1,50,000-/ में सुपारी देना तब दिनॉक 29.02. 2024 को रात्रि में मृतक भरत लाल को नंदु लहरे तथा हिमाशु खुटे के द्वारा उसके मकान में जाकर हत्या कर पेट्रोल से उसका शव को जला देना बताने से मामले में आरापी विजय कुमार भारद्वाज निवासी अण्डी तथा आरोपी हिमाशु खुटे निवासी जमगहन को दिनाँक 06.03. 2024 को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया था। मामले में मुख्य आरोपी नद कुमार लहरे उर्फ नंदु पिता स्व0 मोहित राम लहरे उम्र 38 वर्ष साकिन बरतुंगा जो कि चौकी फगुरम क्षेत्र का गुण्डा बदमाश (हिस्ट्री शिटर) है जो कि थाना तमनार जिला रायगढ के डबल मर्डर मामले में भी फरार था तथा जिसके विरूद्ध डभरा, फगुरम व रायगढ़ में अनेकों अपराधिक प्रकरण दर्ज है, जो शातिर किस्म का आरोपी है वह इस मामले में भी फरार था जिसके पता साजी हेतु *श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदया सक्ती सुश्री अंकिता शर्मा (भा0पु0से0)*, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदया सक्ती सुश्री रमा पटेल एवं श्रीमान अनुविभागीय अधिकारी पुलिस सक्ती श्री मनीष कुंवर के दिशा निर्देश पर लगातार पता साजी किया जा रहा था जिसका पता तलाश हेतु अलग-अलग टीम बनाकर अलग-अलग राज्यों में टीम खाना कर पता साजी किया जा रहा था, कि दिनोंक 02.11.2024 को जरिये मुखबीर से सूचना मिली कि आरोपी नंद कुमार लहरे पुनः किसी अपराधिक घटना को अंजाम देने चौकी फगुरम क्षेत्र में दिखाई दिया है कि सूचना थाना मालखरौदा से टीम बनाकर आरोपी के संभावित ठिकानो पर दबिश देने पर आरोपी का घेरा बदी कर आरोपी को पुलिस हिरासत में लिया गया जिसे थाना लाकर पूछताछ करने पर उक्त आरोपी के द्वारा उक्त घटना को घटित करना स्वीकार किया तथा हत्या करने के एवज में आरोपी विजय कुमार भारद्वाज से 1,50,000- / रूपये प्राप्त करना स्वीकार किया।

संक्षिप्त समाचार

मालगाड़ी के सामने कूद कर युवक ने की आत्महत्या

कोरबा(विश्व परिवार)। कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत सोनालिया फाटक के पास मालगाड़ी के सामने कूद कर एक युवक ने आत्महत्या कर लिया। इस घटना के बाद देखते ही देखते राहगीरों की भीड़ एकत्रित हो गई और इसकी सूचना कोतवाली थाना पुलिस और आरपीएफ रेलवे को दी गई। कोतवाली पुलिस ने रेलवे ट्रैक से शव को निकाल जिला मेडिकल कॉलेज के लिए रवाना किया। जानकारी अनुसार युवक बाइक से फाटक के पास आया था फाटक बंद था, बाइक खड़ी कर आसपास घूमने लगा। जैसे ही ट्रेन आई युवक दौड़ कर गया और उसके सामने कूद गया। फाटक पर मौजूद लोग दौड़ कर पहुंचे, जहां युवक खून से लतपथ पड़ा हुआ था और उसकी मौत हो चुकी थी। स्थानीय लोगों की माने तो लोगों को लगा कि युवक आसपास की ही रहने वाला होगा और गाड़ी खड़ी कर कहीं जा रहा होगा। उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह मालगाड़ी के सामने कूद जाएगा। युवक कौन है और कहां के रहने वाला है। इस बात का पता नहीं चल सकता है।

छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस पर किया गया दीप प्रज्ज्वलन

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर 01 नवंबर 2024 को सभी जिला मुख्यालयों एवं प्रमुख नगरों में दीप प्रज्ज्वलन करने की अपील मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने प्रदेशवासियों से की थी। इस कड़ी में जिले के कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने जिले वासियों से राज्य स्थापना दिवस पर अपने घरों में दीप प्रज्ज्वलन करने अपील किया था। जिसका जिले में व्यापक असर हुआ। लोगो ने अपने घरों के आँगन में राज्यस्थापना दिवस के अवसर पर रंगोली बनाए और दीप प्रज्ज्वलित किया। छत्तीसगढ़ राज्य बनने की खुशी को लोगो ने एक दूसरे को बधाई और शुभकामनाएं देकर और मिठाई खिलाकर भी अभिव्यक्त किया। दीपावली पर्व होने की वजह से राज्यस्थापना की खुशी दुगनी हो गई थी। लोगो ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि हमारा छत्तीसगढ़ लगातार अपनी पहचान स्थापित कर रहा है और यहां के लोग स्वाभिमान के साथ खुशी-खुशी अपने राज्य में रह रहे हैं। राज्यस्थापना के अवसर पर जिले के कलेक्ट्रेट, एसपी कार्यालय सहित अन्य सरकारी भवनों की रोशनी भी की गई।

सड़क दुर्घटना में बाइक सवार युवक की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले में दुर्घटनाएं थमने का नाम ही नहीं ले रही है। यहां फिर एक सड़क हादसा हुआ है जिसमें बाइक सवार युवक की दर्दनाक मौत हो गई है। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची है और जांच कार्यवाही कर रही है। जानकारी के मुताबिक यह पूरी घटना दीपका थाना क्षेत्र अंतर्गत का है। तिवरता कोसाबाड़ी के पास तड़के सुबह एक तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक सवार को अपनी चपेट में ले लिया। इस दर्दनाक हादसे में बाइक सवार युवक की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद आसपास के राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल शुरू कर दी। वहीं मृतक की पहचान खिलेंद्र चैबे बांधाखार नुनेरा निवासी के रूप में हुई है। फिलहाल शव को पीएम के लिए भेजा गया है, मामले में आगे की कार्यवाही की जा रही है।

छेड़छाड़ व मारपीट अपराध दर्ज

कोरबा(विश्व परिवार)। तहसील कार्यालय,पाली में सहायक ग्रेड 03 के पद पर पदस्थ, हाउसिंग बोर्ड कलोनी केराझरिया ब्लॉक ७-1 (06) थाना पाली के निवासी देवेन्द्र कुमार तम्बोली के विरुद्ध घर में घुसकर मारपीट व युवती से छेड़छाड़ के मामले में गैर जमानती धाराओं के तहत अपराध दर्ज किया गया है। उसकी गिरफ्तारी शेष है जिसके लिए पुलिस प्रयासरत है। गिरफ्तारी के अभाव में पीड़ित परिवार भयभीत बताया जा रहा है। पीड़िता की 31अक्टूबर को दी गई लिखित शिकायत पर दर्ज थ्स् के मुताबिक पाली तहसील में पदस्थ देवेन्द्र कुमार तंबोली के द्वारा दिनांक 30৸10৸2024 रात्रि 10 बजे प्रार्थिया के घर में आकर उससे गाली-गलौज किया गया एवं कमर को गलत (नीयत) तरीके से छुआ गया तथा इसका विरोध करने पर मां एवं बहन को जान से मारने की एवं मकान खाली कराने की धमकी दी गई। उसके हरकत से हम(प्रार्थिया) भयभीत एवं डरे सहमे हुए हैं। युवती की रिपोर्ट पर देवेन्द्र कुमार तम्बोली के विरुद्ध गैर जमानती धाराओं 296, 333, 351(2), 74 के तहत जुर्म दर्ज कर लिया गया है। इसी तरह देवेन्द्र कुमार तम्बोली की रिपोर्ट पर युवती के विरुद्ध धारा 296, 351(2)-बीएनएस के तहत जुर्म दर्ज किया गया है। देवेन्द्र की रिपोर्ट है कि दिनांक 30.10.2024 को रात्रि 10 बजे करीबन युवती व उसके परिवार के द्वारा हमारी बनाई हुई रंगोली को मिटा देने और मना करने पर गालियां दी एवं से मारने की धमकी दी गई।

संपादकीय

रिपोर्टों के पीछे मकसद क्या है

ऐसी रिपोर्टें कई दशक से जारी हो रही हैं। अब यह कहने का आधार है कि इनसे गरीबी की ठोस समझ बनाने में कोई मदद नहीं मिली है। इसलिए अब यह सवाल उठाने का वक्त है कि इन रिपोर्टों के पीछे मकसद क्या है? बीते हफ्ते के आरंभ में वैश्विक गरीबी पर में विश्व बैंक की रिपोर्ट आई। सप्ताहांत में संयुक्त राष्ट्र ने इसी संबंध में अपनी रिपोर्ट जारी की। विश्व बैंक विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी स्थित ऑक्सफॉर्ड पॉवर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव पिछले कई वर्षों से गरीब लोगों की संख्या के बारे में अपना साझा अनुमान जारी कर रहे हैं। अपनी ताजा रिपोर्ट में उन्होंने भारत के बारे में कहा है कि यहां 23 करोड़ 40 लाख लोग चरम गरीबी में जी रहे हैं। विश्व बैंक ने ये संख्या 13 करोड़ 40 लाख बताई थी। ये दोनों आधिकारिक संस्थाएं हैं। इनके अलावा कुछ एनजीओ भी अपना अनुमान जारी करते हैं। उनसे भी अलग संख्या सामने आती है। ऐसी रिपोर्टें कई दशक से जारी हो रही हैं। इसलिए अब यह कहने का आधार है कि इनसे गरीबी को समझने या उससे लोगों को मुक्ति दिलाने के बारे में कोई ठोस सोच नहीं बनती है। उलटे भ्रम पैदा होता है। इसलिए अब यह सवाल उठाने का वक्त है कि इन रिपोर्टों को तैयार करने के पीछे मकसद क्या है? उद्देश्य दुनिया में गरीबी खत्म करना है, तो फिर ये संस्थाएं न्यूनतम और भ्रामक पैमाने क्यों अपनाती हैं? नव-उदारवादी दौर के पहले एक मान्य फॉर्मूला व्यक्तियों को उपलब्ध कैलोरी होती थी। भारत में गांवों में जिन लोगों को रोजाना 2200 और शहरों में 2100 से कम कैलोरी उपलब्ध थी, उन्हें गरीब समझा गया था। अनेक गंभीर अर्थशास्त्रियों दिखाया है कि आज इस कैलोरी उपलब्धता से वंचित लोगों की संख्या तब से ज्यादा है। वजह यह है कि शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवहन जैसी सेवाओं का निजीकरण होने का बोझ लोगों की निजी आमदनी पर पड़ा है। इस कारण उन्हें अपनी जरूरतों में कटौती करनी पड़ी है। इस बात के आधिकारिक आंकड़े हैं कि बहुत से गरीब लोगों ने अपने भोजन में कटौती की है। जबकि शिक्षा एवं इलाज जैसी अनिवार्यताओं पर बढ़े खर्च की गणना खर्च क्षमता में करके विश्व बैंक करोड़ों लोगों को गरीबी रेखा से उठा बता देता है।

खाद्य सामग्री में मिलावट से जूझता समाज..

कर्म सिंह ठाकुर

इसका असर न केवल उपभोक्ताओं की मानसिकता पर पड़ता है, बल्कि खाद्य आपूर्ति श्रृंखला के सभी पहलुओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जब लोगों का विश्वास उठने लगता है, तो वे स्वस्थ और सुरक्षित विकल्पों की तलाश में जुट जाते हैं खाद्य सामग्री में मिलावट एक गंभीर समस्या है जो वर्तमान समय में तेजी से बढ़ रही है और मानव जीवन के लिए गंभीर संकट का कारण बन रही है। हर दिन सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफॉर्म्स पर विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों में मिलावट के वीडियो वायरल होते रहते हैं, जो इस समस्या की गंभीरता को दर्शाते हैं। मिलावट का प्रभाव न केवल हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है, बल्कि यह हमारी अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचे पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यह समस्या केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण और पहाड़ी इलाकों में भी इसका व्यापक प्रसार हो चुका है। आम जनता के बीच इसके प्रभाव को लेकर व्यापक चिंता है और इसे समाप्त करने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयासों की आवश्यकता है। खाद्य सामग्री में मिलावट के कई कारण हैं, जो इस समस्या की जड़ में मौजूद हैं। सबसे पहला कारण है बेरोजगारी और आर्थिक संकट, जो कई लोगों को गलत तरीकों का सहारा लेने के लिए मजबूर करता है। मौजूदा समय में बेरोजगारी की दर बढ़ती जा रही है, और कई लोग अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए मिलावट जैसे गलत कामों में संलग्न हो जाते हैं। बढ़ती महंगाई और आर्थिक अस्थिरता के कारण भी कुछ व्यापारी अधिक मुनाफा कमाने के लिए सस्ते और हानिकारक पदार्थों को असली उत्पादों में मिलाते हैं। इस तरह के व्यवहार से समाज में नैतिकता का पतन हो रहा है और लोग अपने लाभ के लिए दूसरों की जान को खतरे में डाल रहे हैं। कानूनी सख्ती की कमी भी खाद्य सामग्री में मिलावट की समस्या को बढ़ावा देती है। भारत में खाद्य सुरक्षा से संबंधित कई कानून हैं, लेकिन इनका सही ढंग से क्रियान्वयन नहीं हो पाता है। मिलावटखोर अक्सर कानून के झोल का फायदा उठाकर हानिकारक कार्यों को अंजाम देते हैं। जब तक सख्त दंड और प्रभावी कार्रवाई नहीं होगी, तब तक इस समस्या पर काबू पाना मुश्किल होगा। उपभोक्ता जागरूकता का अभाव भी एक बड़ा कारण है, जो मिलावट की समस्या को बढ़ावा देता है। अधिकांश उपभोक्ता खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की जांच नहीं करते हैं और सस्ते दामों के लालच में आकर मिलावटी वस्तुएं खरीद लेते हैं। जागरूकता की कमी के कारण उपभोक्ता मिलावट के हानिकारक प्रभावों को समझ नहीं पाते हैं और अनजाने में अपना और अपने परिवार का स्वास्थ्य खतरे में डालते हैं। ऐसे में, उपभोक्ता जागरूकता अभियान चलाना अत्यंत आवश्यक है ताकि लोग खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की पहचान कर सकें और मिलावट से बच सकें। खाद्य सामग्री में मिलावट के कई प्रकार हैं, जिनका प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है। दूध और दूध उत्पादों में मिलावट एक आम समस्या है। इसमें पानी, डिटर्जेंट, सिंथेटिक दूध, यूरिया, और अन्य हानिकारक रसायनों का मिश्रण किया जाता है। इस प्रकार की मिलावट से दूध की पौष्टिकता कम हो जाती है और यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इसके अतिरिक्त मसालों में मिलावट भी एक गंभीर समस्या है। हल्दी, मिर्च, धनिया पाउडर आदि में कृत्रिम रंग, ईंट का चूरा, चॉक पाउडर और अन्य अशुद्ध पदार्थ मिलाए जाते हैं, जो पेट से संबंधित बीमारियों का कारण बन सकते हैं। इसी तरह, तेल और घी में सस्ते और हानिकारक तेल मिलाकर उन्हें शुद्ध घी के नाम पर बेचा जाता है, जो हृदय रोगों के जोखिम को बढ़ा सकता है। यह समस्या केवल प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों तक सीमित नहीं है, बल्कि सब्जियों और फलों में भी देखी जाती है। ताजगी दिखाने के लिए केमिकल्स और कृत्रिम रंगों का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं, यहां तक कि कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां भी हो सकती हैं। खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में भी मिलावट की समस्या तेजी से बढ़ रही है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में भी मिलावट के मामले सामने आ रहे हैं। इन क्षेत्रों में जहां स्वच्छ और शुद्ध खाद्य पदार्थों की उम्मीद की जाती है, वहां भी मिलावट का प्रसार चिंता का विषय है। मिलावटखोर ऊंचे दामों पर वस्त्रायुक्त दवाओं, रासायनिक उर्वरकों और हानिकारक केमिकल्स का प्रयोग फलों और सब्जियों पर कर रहे हैं। इन पहाड़ी क्षेत्रों में लोग आम तौर पर अपने स्वास्थ्य को लेकर अधिक सतर्क होते हैं, लेकिन अब यहां भी लोगों को मिलावट से बचने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। मिलावट के दुष्परिणाम हमारे स्वास्थ्य पर गहरे प्रभाव डालते हैं। मिलावट से उत्पन्न होने वाली बीमारियां जैसे कि पेट के रोग, त्वचा संबंधी समस्याएं, कैंसर, हृदय रोग आदि बढ़ रही हैं। छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और वृद्ध लोगों पर इसका प्रभाव विशेष रूप से हानिकारक होता है। जिन खाद्य पदार्थों का सेवन वे पोषण के लिए करते हैं, वही उनके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने का कारण बनते हैं। इसके अलावा, इन बीमारियों के इलाज पर होने वाला खर्च व्यक्ति और समाज दोनों के लिए आर्थिक बोझ बन जाता है। कई बार गंभीर बीमारियों का इलाज इतना महंगा हो जाता है कि सामान्य परिवार इसे वहन नहीं कर पाते और इससे उनकी आर्थिक स्थिति भी खराब हो जाती है। मिलावट का एक और गंभीर दुष्प्रभाव यह है कि इससे उपभोक्ताओं का खाद्य उत्पादों पर से विश्वास उठने लगता है। लोग यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि जो कुछ भी वे खा रहे हैं, वह उनकी सेहत के लिए सुरक्षित है या नहीं। इसका असर न केवल उपभोक्ताओं की मानसिकता पर पड़ता है, बल्कि खाद्य आपूर्ति श्रृंखला के सभी पहलुओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जब लोगों का विश्वास उठने लगता है, तो वे स्वस्थ और सुरक्षित विकल्पों की तलाश में अधिक खर्च करने को तैयार होते हैं, जिससे खाद्य पदार्थों की कीमतों में भी वृद्धि होती है। ताजगी दिखाने के लिए केमिकल्स और कृत्रिम रंगों का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं, यहां तक कि कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां भी हो सकती हैं। खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में भी मिलावट की समस्या तेजी से बढ़ रही है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में भी मिलावट के मामले सामने आ रहे हैं। इन क्षेत्रों में जहां स्वच्छ और शुद्ध खाद्य पदार्थों की उम्मीद की जाती है, वहां भी मिलावट का प्रसार चिंता का विषय है। मिलावटखोर ऊंचे दामों पर वस्त्रायुक्त दवाओं, रासायनिक उर्वरकों और हानिकारक केमिकल्स का प्रयोग फलों और सब्जियों पर कर रहे हैं। खाद्य सामग्री में मिलावट को रोकने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण उपाय है कानूनी सख्ती और कड़े दंड का प्रावधान। खाद्य सामग्री में मिलावट करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए और कड़े दंड निर्धारित किए जाने चाहिए। इसके अलावा भी सरकार को इस पर रोक लगाने के लिए कड़े उपाय करने होंगे।

आलेख

कांग्रेस फिर एक बार अपनी हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ने को तैयार

अनिल चतुर्वेदी

कांग्रेस फिर एक बार अपनी हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ने को तैयार होती दिख रही है। हरियाणा विधानसभा चुनावों में हार की बजह टटोलने के लिए पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे जो तीन सदस्यीय टीम बनाई उसमें शामिल नेता शायद ऐसा ही जबाव अपने नेता को देने की तैयारी में हैं। यह अलग बात है कि इस फ़ैक्ट्री फ़ाइंडिंग कमेटी में हरियाणा के पूर्व सीएम और इस चुनाव का सारा दारोमदार संभालने वाले भूपेन्द्र सिंह हुड्डा शामिल नहीं किए गए हैं।पर जिन्हें ज़िम्मेदारी दी गई है उनके नाम उजागर भले नहीं किए गए हैं पर कांग्रेसी सूत्र बता रहे हैं कि राजस्थान और छत्तीसगढ़ के जो दो नेता जाँच के लिए हरियाणा भेजे गए उन्हें ज़मीनी स्तर पर लोगों से इस हार के कारणों को टटोलने के निर्देश दिए गए हैं। पर भला हार की इस निराशा में नेताओं की कितनी हिम्मत रहेगी घर-घर घूम कर हार की बाबत लोगों से पूछने की और सवाल उम्र का भी है सो आराम भी ज़रूरी होगा ही। तभी अगर दिल्ली के कांग्रेसी ही यह कहने लगें कि फ़ैक्ट्री पता करने गए ये दो नेता होटल में ठहर मोबाइल या फिर फ़ोन पर लोगों से बात कुछ पूछने के नाम पर यह पूछ रहे हों कि कि क्या हम ईवीएम की बजह से हारे हैं। तो नेता पर शक तो कोई भी कर ही सकता है ना! तब भला फ़ैक्ट्री फ़ाइंडिंग का मतलब भी क्या रह जाता है। अब भला हरियाणा हार का घूँट तो कांग्रेसी पाकर रह जाएंगे पर चिंता तो बाक़ी उन सूबों की सता रही है जहां हरियाणा हार का असर पड़ता कांग्रेसियों को दिख रहा है। भला होता कि गुटबाज़ी छोड़ कांग्रेसी हरिया जीतते और फिर बाक़ी सूबों में सीना तान कर चुनाव लड़ रहे होते। हरियाणा में जीत और जम्मू-कश्मीर में बेहतर प्रदर्शन से भाजपा ही नहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उत्साहित हैं। और तभी अब संघ महाराष्ट्र या झारखंड के चुनाव के लिए ही नहीं दिल्ली चुनाव को जीतने की तैयारी में लगा बताया जा रहा है। पिछले दिनों संघ की रणथंभोर में हुई दो दिन की बैठक हुई बैठक से दिल्ली के नेता खुश हैं। यह अलग बात है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा की लोकसभा चुनावों के दौरान संघ को लेकर बयानबाज़ी से संघ के नेता नाराज़ बताए जा रहे थे पर हरियाणा की जीत ने इस नाखुशी को ख़त्म कर दिया ।चर्चा तो यह भी बताई जा रही है कि भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने को लेकर भी संघ अब दखल देने की जगह खुद को अलग रखे हुए हैं। भाजपा के ही कुछ नेतो यहाँ कह रहे हैं कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा की संघ को लेकर बयानबाज़ी के बाद संघ के मोंहन भागवत की नाराजगी के बावजूद जानते थे कि उनकी यह नाराजगी हरियाणा चुनाव में जीत के बाद ख़त्म हो जाएगी ,और हुआ भी ऐसा ही। संघ के ही एक अदने क़द के नेता तो यह भी कहने नहीं चूके कि संघ जानता है कि मोदी है तो मुमकिन है। ज़ाहिर है कि 2025 में विभिन्न राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनावों को लेकर संघ तैयारी में लग गया है। बताया तो यह भी जा रहा है कि रणथंभोर में हुईसंघ की मीटिंग में ही दिल्ली चुनाव को लेकर भाजपा विधायकों,सांसदों और प्रांत व विभाग प्रमुखों को चुनावों की तैयारी में लग जाने को कह दिया है। दिल्ली के वरिष्ठ भाजपा विधायक की मानो तो संघ और पार्टी इस बार किसी भी शर्त पर दिल्ली का अपना वनबास ख़त्म करना चाहती है। अब संघ के बूते भाजपा क्या कर गुजरती है देखना बाक़ी है। भाजपा दिल्ली की सत्ता के लिए बेताब हैं। अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा को सत्ता में बैठी आप पार्टी के अलावा कांग्रेस से चुनौती मिलनी है। दिल्ली के बदलते हालातों को देख भाजपा को आप पार्टी कमजोर होती दिख रही है। पार्टी के कई नेता मान बैठे हैं कि आप का मुस्लिम और दलित वोट आप से खिसक कर कांग्रेस की ओर जा सकता है ऐसे में इन दोनों पार्टियों के बीच वोटों की खींचातानी से भाजपा को राजनीतिक तौर पर फ़ायदा हो सकेगा। और तभी भाजपा इस चुनाव में कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहती है। अब अगर कोई यह मान रहा हो कि भाजपा की यह रणनीति लोकसभा चुनाव के बाद बनी है तो ऐसा भी नहीं है। भाजपाई सूत्र मानते हैं कि लोकसभा चुनावों में टिकट बँटवारे के पहले ही भाजपा दिल्ली को लेकर चिंतित थी। और तभी उसने अपने सात में से छह सांसदों के टिकट काट नए चेहरे मैदान में उतारे।

जिन पिंग के दिमाग के कोने में भारत की जीरो अंहमियत

हरिशंकर व्यास

भारत के प्रति चीन इंच भर (हां, इंच भर) न नर्म होगा, न पीछे हटेगा। इसका फिर प्रमाण 23 अक्टूबर 2024 की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिन पिंग की मुलाकात है। वैश्विक राजनीति के परिपेक्ष्य में मुझे भारत के विदेश मंत्री, विदेश सचिव के बयानों से चीन के लचीले बनने की उम्मीद थी। लगा लद्दाख क्षेत्र की सीमा पर चीन अप्रैल 2020 से पूर्व की यथास्थिति लौटा देगा। भारतीय सेना जिस इलाके में पैट्रोलिंग करती थी, वहां वह वापिस करने लगेगी। चीन यदि अपने कब्जाएं 2000 वर्गकिलोमीटर भारतीय क्षेत्र से सैनिक हटाता है, दोनों देशों की सेनाएं आमने-सामने के गतिरोध से पीछे हटती है तो भारत का चीन पर विश्वास बनेगा। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश तब मन से चीन का दोस्त होगा। और चीन-रूस मिलकर विश्व राजनीति में अपनी जो अलग व्यवस्था बना रहे है उसमें भारत साझेदार या परोक्ष समर्थक होगा। वह सैनिक-सुरक्षा चिंता में अमेरिका-पश्चिमी देशों की और देखना रोक देगा। इससे चीन-रूस के पश्चिमी देशों के खिलाफ शक्ति परीक्षण, नई विश्व व्यवस्था, वित्तिय व्यवस्था के एजेंडे को बल मिलेगा। आखिर 140 करोड़ लोगों की आबादी का देश डालर में लेन-देन के सिस्टम से युआन-रूबल मिक्स करेंसी के एक्सचेंज का आंशिक सहभागी भी बने तो उथल-पुथल होगी।

वास्तविकता है ताईवान को ले कर चीन की अमेरिका से जबरदस्त ठनी हुई है। उसकी आर्थिकी अमेरिका-योरोप की घेरेबंदी से मंदी की मारी है। वह रूस के साथ सैनिक-सामरिक-आर्थिकी की साझेदारी से दुनिया का अछूत हुआ है तो ऐसे में भारत यदि उसके मंसूबों की नई विश्व व्यवस्था में उसका साझेदार या मौन पैरोकार भी बने तो रूस-चीन के झंडे़ का दबदबा बढ़ेगा। जब दांव इतने ऊंचे और भविष्य दृष्टि के है तब लद्दाख क्षेत्र के बंजर पठार के 2000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में चीन अपनी सेना को अप्रैल 2020 की स्थिति में लौटा ले तो नुकसान से ज्यादा उसे फायदा है!

मगर नहीं! चीन की मनोदशा में इंच भर पीछे हटने या झुकने की वृति नहीं है। माओं, चाऊएनलाई, देंग और शी जिन पिंग के समय में बार-बार जाहिर हुई भारत के प्रति हिकारत का उसका रवैया जस का तस है। चीन भारत का वह पड़ौसी है जो धूर्त, स्वार्थी है तो तलवारधारी विश्व व्यापारी भी है। इक्कीसवीं सदी में वह भारत सहित पूरी दुनिया को अपनी वर्चस्ववादी धुरी का पुछल्ला बनाने की जिद् ठाने हुए है। उसके रोडमैप में अब एक कदम पीछे दो कदम आगे का व्यवहार भी नहीं है। उसे व्यापार और आर्थिकी की रणनीति में भारत को पुछल्ला बनाना ही है।

फिलहाल उसके ताजा इरादों पर गौर करें। एक, चीन ने रूस को अपनी फैंचाइंजी बना लिया है। रूस उस पर आश्रित है। उसका कंधा है। राष्ट्रपति शी जिन पिंग जो कहेंगे वही पुतिन करेंगे। पुतिन कतई शी जिन पिंग को नहीं समझा सकते है। दो, चीन-रूस का एकीकृत मिशन अमेरिका-पश्चिम की केंद्रीकृत धुरी के आगे अपनी नई विश्व व्यवस्था बनाना है। तीन, चीन ने इसके लिए दुनिया भर के छोटे-गरीब देशों को बेइंतहा पैसा दे कर उन्हे अपना मोहताज बनाया है। भारत के सभी पड़ौसी चीन पर आश्रित है। अर्थात वह देशों की संख्यात्मक ताकत बनाते हुए है। चार, भारत, जापान, आस्ट्रेलिया जैसे देशों को चीन ने सैनिक दबाव और व्यापार के दोहरे कारणों से दुविधा, चिंता तथा आयातों की निर्भरता में ऐसा फंसाया है कि भारत के विदेश मंत्री को सार्वजनिक तौर पर यह मजूबरी बतलानी पड़ती है कि यह मुद्दा (व्यापार) जटिल है और इसमें ब्लैक एंड व्हाइट जैसा कुछ नहीं है। पांच, ब्रिक्स की बैठक में नेटो सदस्य तुर्की को न्यौत कर तथा मिस्र, इथियोपिया की सदस्यता का अर्थ है कि चीन-रूस ने उत्तर-मध्य एसिया के सभी इस्लामी देशों के अलावा पाकिस्तान से तुर्की तक फैले पूरे पश्चिम एसिया, उत्तर अफ्रिका के उस सभ्यतागत क्षेत्र को अपने प्रभाव में लेने का ब्ल्यूप्रिंट बनाया है जहां इस्लामी देशों (विशेषकर यहूदी इजराइल के परिपेक्ष्य में) की गोलबंदी भविष्य में चीनी सभ्यता का खंभा हो सकती है। तभी चीन और राष्ट्रपति शी जिन पिंग के दिमाग के कोने में भारत की जीरो अंहमियत है। चीन का थिंकटैंक जानता है 140 लोगों का भारत कभी ईस्टइंडिया कंपनी से चलता था अब अदानी-अंबानी से चलता है। अदानी-अंबानी, कारोबारियों को मैनेज करों, उनका मुनाफा बनवाओं तो अपने आप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कजाक भागे आएंगे। विदेश मंत्री जयशंकर, विदेश मंत्रालय खुद ही हैडलाइन बना डालेंगे कि भारत और चीन पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गश्त के पैटर्न को लेकर एक समझौते पर पहुंच चुके हैं। वास्तविकता है ताईवान को ले कर चीन की अमेरिका से जबरदस्त ठनी हुई है। उसकी आर्थिकी अमेरिका-योरोप की घेरेबंदी से मंदी की मारी है। वह रूस के साथ सैनिक-सामरिक-आर्थिकी की साझेदारी से दुनिया का अछूत हुआ है तो ऐसे में भारत यदि उसके मंसूबों की नई विश्व व्यवस्था में उसका साझेदार या मौन पैरोकार भी बने तो रूस-चीन के झंडे़ का दबदबा बढ़ेगा। जब दांव इतने ऊंचे और भविष्य दृष्टि के है तब लद्दाख क्षेत्र के बंजर पठार के 2000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में चीन अपनी सेना को अप्रैल 2020 की स्थिति में लौटा ले तो नुकसान से ज्यादा उसे फायदा है!प्रधानमंत्री मोदी कजाक जा कर राष्ट्रपति से मुलाकात कर रहे है। फिर भले हम-आप और दुनिया खोजती रहे कि भारत के सैनिक क्या सचमुच डेपसांग, गलवान, गोगरा, पैंगॉन्ग के नॉर्थ ब्लॉक और कैलाश रेंज में वैसे ही गस्त लगाते हुए है जैसे अप्रैल 2020 से पहले लगा रहे थे?

बैंकों को विदेशियों को बेचना कितना जायज

डा. अश्विनी महाजन

यदि यस बैंक में नियंत्रण हिस्सेदारी विदेशियों को बेचने का प्रस्तावित सौदा हो जाता है, तो इससे बैंकों के विनिवेश और उन्हें विदेशियों को बेचने का एक बड़ा मामला खुल सकता ह वर्ष 2020 के मार्च माह में भारत के एक महत्वपूर्ण निजी बैंक, यस बैंक के निजी प्रबंधन की गलतियों (भ्रष्टाचार सहित) के कारण लगभग दिवालिया हो गया था। लोगों का विश्वास खोने के बाद बैंक से जमाकर्ताओं ने अपनी राशि वापस लेना शुरू कर दिया जिसके चलते बैंक को अपने लेन-देन को रोकना पड़ा। ऐसे में भारतीय स्टेट बैंक (एक सरकारी बैंक) ने 49 प्रतिशत शेयर खरीद कर उसे अपने हाथ में लिया जिससे यस बैंक में जमाकर्ताओं का विश्वास पुन: जम गया। उसके बाद यह बैंक पुन: उठ खड़ा हुआ और अपनी सामान्य बैंकिंग गतिविधियों में संलग्न हो गया। बाद में यस बैंक ने नए शेयर जारी कर और पूंजी जुटाई, और भारतीय स्टेट बैंक की हिस्सेदारी 24 प्रतिशत तक आ गई। स्टेट बैंक के अलावा 11 अन्य ऋणदाता संस्थाएं हैं जिनके पास यस बैंक के लगभग 9.74 प्रतिशत शेयर हैं। यस बैंक के 16.05 प्रतिशत शेयर अन्य दो निजी इक्विटी फंडों के पास हैं। समाचारपत्रों की हालिया रपटों के अनुसार जापान की मितसुभिषी यूएफजे फाइनेंसिएल ग्रुप नामक कंपनी को स्टेट बैंक ऑफइंडिया के यस बैंक में शेयरों को बेचने की बात आगे बढ़ गई है। प्रस्तावित विदेशी निवेशक, यस बैंक के 51 प्रतिशत शेयर कब्जाना चाहते हैं ताकि उसके पास निर्णय का अधिकार आ जाए। इसके लिए हालांकि वे पहले तो भारतीय रिजर्व बैंक की इस नियमानुसार शर्त को मानने के लिए तैयार नहीं थे कि उन्हें अगले 15 वर्षों में अपनी प्रमोटर शेयरहोल्डिंग को 26 प्रतिशत तक लाना होगा, लेकिन अब वे वो भी मान गए हैं। गौरतलब है कि इस बैंक को उबारने में भारतीय स्टेट बैंक ने 7520 करोड़ रुपए का पुन: पूंजीकरण किया था। लेकिन बैंक के पुनरुद्धार के बाद भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा लगाई गई पूंजी बढक़र अब 18000 करोड़ रुपए पहुंच चुकी है। भारतीय रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप के बाद न केवल जमाकर्ताओं का पैसा डूबने से बच गया, बल्कि बैंकिंग व्यवस्था में लोगों का विश्वास पुन: स्थापित हुआ और इस प्रक्रिया में भारतीय स्टेट बैंक को भी 10000 करोड़ रुपए से अधिक का पूंजीगत लाभ हुआ। ऐसे में इस बात पर विचार करना जरूरी है कि क्या यस बैंक के 51 प्रतिशत शेयरों को विदेशी हाथों में सौंप कर, यानी यस बैंक जैसे महत्वपूर्ण बैंक को विदेशी हाथों में सौंपना उचित होगा? एलपीजी नीतियों के अंतर्गत कई सरकारी उद्यमों का निजीकरण किया गया। बैंकिंग क्षेत्र में चूंकि पहले से ही निजी भारतीय और विदेशी बैंक कार्यरत थे और वे बदस्तूर चलते रहे। इसके साथ ही साथ कुछ सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ गैर वित्तीय संस्थानों को बैंकों में बदला गया और कुछ नए बैंकों को निजी क्षेत्र में काम करने के लाईसेंस प्रदान किए गए। लेकिन इस दौरान भी बैंकों के सार्वजनिक क्षेत्रों के निजीकरण से सरकार बचती रही। गौरतलब है कि बैंकिंग किसी भी देश के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय क्षेत्र है। यह बात सही है कि दुनिया में निजी और सरकारी दोनों प्रकार के बैंक पाए जाते हैं। अमरीका और यूरोप सरीखे पूंजीवादी देशों में ज्यादातर बैंक निजी हाथों में हैं। निजी बैंकों में जमाकर्ताओं की राशि बीमा की सीमा तक ही सुरक्षित होती है। बीते सालों में अमरीका में ही हजारों बैंक दिवालिया हुए, जिसके चलते जमाकर्ताओं को उनकी गाढ़े पसीने की कमाई से हाथ धोना पड़ा। यूरोप की स्थिति भी बहुत भिन्न नहीं है और वहां भी आए दिन बैंकों की दिवालिया होने की खबरें आम बात है। भारत एक ऐसा देश है, जहां आजादी के बाद और खास तौर पर 1969 में बड़े बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद निजी बैंकों के दिवालिया होने की भी खबरें अपवाद हैं। सार्वजनिक बैंकों में जमाकर्ताओं की राशि डूबना तो संभव है ही नहीं, क्योंकि इस राशि की सरकार की संप्रभु गारंटी होती है। भारतीय रिजर्व बैंक के सख्त नियमन के कारण निजी बैंकों में लोगों की धन राशि काफी हद तक सुरक्षित है और जब कभी कुप्रबंधन के कारण उनके दिवालिया होने की संभावना भी बनती है तो सरकारी हस्तक्षेप से उसे दुरुस्त कर दिया जाता है। पिछले दिनों यस बैंक का पुनरुद्धार उसका का जीता-जागता एक उदाहरण है। बैंकों का निजीकरण उन्हें विदेशी हाथों में सौंप कर ही क्यों : हाल ही में कुछ चुनिंदा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का एकीकरण कर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की संख्या को कुछ कम किया गया है। साथ ही साथ समय-समय पर सरकार सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों के निजीकरण की बात को दोहराती भी रही है। लेकिन अभी तक किसी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक का निजीकरण नहीं किया गया है। आज जब देश में इस विषय पर नीतिगत चर्चा के बिना एक महत्वपूर्ण बैंक, जो भारतीय स्टेट बैंक द्वारा अधिग्रहीत कर डूबने से बचाया गया था, को विदेशी हाथों में सौंपना यस बैंक के ग्राहकों, देश के वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता और विकास के लिए उपयुक्त होगा। क्या यस बैंक को विदेशी हाथों में सौंपना, एकमात्र विकल्प है या उसके अलावा भी विकल्प हैं? यदि विकल्प हैं तो उन पर गंभीरता से विचार हुआ है

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, मंगलवार 05 नवम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री साय ने बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पं. धीरेंद्र शास्त्री से आशीर्वाद ग्रहण किया

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज अपने निवास में बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र शास्त्री से प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए आशीर्वाद ग्रहण किया। मुख्यमंत्री श्री साय ने पं. धीरेंद्र शास्त्री के अपने निवास पहुंचने पर उन्हें शाल- श्रीफल भेंटकर उनका का आत्मीय स्वागत किया। गौरतलब है कि पं. धीरेंद्र शास्त्री छत्तीसगढ़ के प्रवास पर आए हुए हैं। आज राजधानी रायपुर आने से पहले कल वे कांकेर और कवर्धा के कार्यक्रमों में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के परिवारजन, स्वामी राजीवलोचन जी महाराज और निवास के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

आर्यिका प्रशांतमति माताजी का समाधि मरण

कुलचारा/तेलंगाना (विश्व परिवार)। श्री 1008 विघ्नहर पार्श्व नाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कुलचाराम तेलंगाना में साधना महोदधि, तप शिरोमणि अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज की संघस्थ आर्यिका प्रशांत मति माता जी की 69 दिन से निरंतर चल रही सल्लेखना के पश्चात समाधि पूर्वक मरण हुआ समाधि की पराकाष्ठा, समता की जननी, वात्सल्य की मुर्ति सहज साध्वी ने आज सुबह 10:40 पर अरिहंत सिद्ध का ध्यान करते हुये अपनी अन्तिम स्वासो को विदा किया। सबसे क्षमा ,सबको क्षमा बोलते बोलते उन्होंने सल्लेखना पूर्वक उत्कृष्ट समाधि धारण की।

मुख्यमंत्री साय ने 'देशबंधु' चित्तरंजन दास को उनकी जयंती पर किया नमन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने राष्ट्रवादी नेता,प्रसिद्ध वकील, प्रबुद्ध पत्रकार और महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी 'देशबंधु' चित्तरंजन दास की 05 नवंबर को जयंती पर उन्हें नमन किया है। राष्ट्र के लिए उनके अतुलनीय योगदान को याद करते हुए श्री साय ने कहा कि भारत के स्वाधीनता संग्राम में देशबंधुजी ने अपनी एक स्वतंत्र छाप छोड़ी। उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों और विचारों से समझौता नहीं किया। कई देशभक्तों की तरह उन्होंने भी असहयोग आंदोलन के अवसर पर अपनी वकालत छोड़ दी और अपनी सारी संपत्ति मेडिकल कॉलेज तथा अस्पताल को दे दी। वे अपनी तीक्ष्?ण बुद्धि और पत्रकारीय दृष्टिकोण के लिए भी जाने जाते थे। देशवासी उन्हें प्यार से 'देशबंधु' कहते थे। श्री साय ने कहा कि देशबंधु जी स्वदेशी के विचार से बहुत ज्यादा प्रभावित थे। उन्होंने बंगाल में गांवों के पुनर्निर्माण, स्थानीय स्वशासन की स्थापना और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए काम किया।जीवन के अंतिम समय तक वे देशसेवा में लगे रहे। देशबंधु जी के त्याग और देशभक्ति को हमेशा याद किया जाएगा।

मुख्य अतिथि सांसद बृजमोहन अग्रवाल की उपस्थिति में होगा राज्योत्सव का आगाज

दुर्ग (आरएनएस)। राज्य शासन के निर्देशानुसार एवं कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी के मार्गदर्शन में जिले के पुरानी गंज मंडी गंजपारा दुर्ग में कल राज्योत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस भव्य समारोह में सांसद बृजमोहन अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे तथा दुर्ग शहर विधायक गजेंद्र यादव कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। उक्त आयोजन में सांसद, दुर्ग शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र के विधायक सहित जिला पंचायत अध्यक्ष एवं महापौर विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इनमें लोकसभा सांसद विजय बघेल, दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर, अहिवारा विधायक डोमन लाल कोर्सेवाड़ा, वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन, साजा विधायक ईश्वर साहू, पाटन विधायक भूपेश बघेल, भिलाईनगर विधायक देवेंद्र यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा भुनेश्वर यादव, महापौर नगर पालिका निगम दुर्ग धीरज बाकलीवाल, महापौर नगर पालिका निगम भिलाई नीरज पाल, महापौर नगर पालिका निगम रिसाली श्रीमती शशि सिन्हा, महापौर नगर पालिका निगम भिलाई चरोदा निर्मल कोसरे शामिल हैं।

हृदय में विचारों की पवित्रता ही पुण्य है और विचारों की अपवित्रता ही पाप : मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज

इंदौर (विश्व परिवार)। हृदय में विचारों की पवित्रता ही पुण्य है और विचारों की अपवित्रता ही पाप। अपने जीवन को पुण्यमय बनाना चाहते हो तो, उन पाप को छोड़ दो जो आपके जीवन को अपवित्र बनाते है, ज्यों ज्यों जीवन में पवित्रता आती है, त्यों-त्यों अंदर की कलुषता अपने आप निकलती चली जाती है, पाप से बचो, पुण्य अपने आप बड़ेगा उपरोक्त उद्गार मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज ने उदयनगर जैन मंदिर में प्रात:कालीन प्रवचन सभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने धर्म क्यों किया जाता है कि चार बातों पर प्रकाश डालते हुये कहा कि -अधिकांश लोग धर्म परंपरागत संस्कार से प्रेरित होकर करते है तो दूसरे वह लोग है जो यह सोचकर धर्म करते है कि धर्म करने से दु:ख दारिद्र दूर होकर संकट टल जाऐंगे, तीसरे वह व्यक्ति है जो यह सोचकर धर्म करते है कि हम पुण्य करेंगे तो हमें सदगति मिलेगी,तथा चौथे व्यक्ति के मन में धर्म की यह अवधारणा है धर्म करने से जीवन पवित्र बनता है, जिससे उनके जीवन में अमूल चूल परिवर्तन आता है मुनि श्री ने कहा कि जीवन को पवित्र बनाने के लिये ही धर्म किया जाता है धर्म में कोई प्रलोभन नही होंना चाहिये धर्म में यदि प्रलोभन होता है तो उसकी पूर्ती न होंने पर व्यक्ति धर्म से विमुख हो जाता है, एवं उसके अंदर धर्म के प्रति शिकायत और क्षोभ उत्पन्न होता है। मुनि श्री ने अपने पिता की मृत्यु पर धर्म से विमुख युवक को समझाते हुये कहा किजीवन मरण संयोग वियोग किसी के हाथ में नहीं धर्म संकट और विपत्तियों की स्थिति में धैर्य और समता रखना सिखाता है।उन्होंने कहा जो लोग आत्ममुग्धता में जीते है वह लोग अपना पूरे जीवन में धर्म करने के पश्चात भी किसी दूसरे को प्रेरित नहीं कर पाते, संसार में संयोग वियोग- हर्ष और विषाद पुण्य और पाप के खेल से चलते है पुण्य कमाने के लिये पुण्य मत करो वल्कि जीवन को धन्य बनाने के लिये पुण्य करो मुनि श्री ने कहा पुण्य के प्रभाव से ही आपको अनुकूल संयोग मिलते है तथा प्रतिकूल संयोग टलते है,जीवन को पवित्र बनाने का लक्ष्य रख कर यदि आप अपनेआपको धर्मी मानते हो तो आज से ही पाप करना बंद कर दो,और यदि अपने आपको पापी मानते हो तो आज से ही पाप करना छोड़ दो।

जो व्यक्ति धार्मिक क्रिआओं को करते ही नहीं वल्कि उसे आत्मसात करते है उनके उच्च आदर्शो को देखकर दूसरे लोग भी प्रेरणा पाते है। उपरोक्त जानकारी धर्म प्रभावना समिति के प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी ने बताया 5 नवम्वर मंगलवार को प्रवचन प्रात: 8:30 बजे से गोयल नगर दि.जैन मंदिर में होंगे तथा उधर से ही आहार चर्या संपन्न होकर मुनिसंघ मोहताभवन रैसकोर्स रोड़ की ओर प्रस्थान करेंगे,6 नवम्वर वुद्धवार के समस्त कार्यक्रम मोहताभवन से ही संचालित होंगे।7 नवम्वर गुरुवार को प्रात:7 बजे से मोहताभवन से श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान की घटयात्रा मुनिसंघ के सानिध्य में प्रारंभ होगी जो कि कार्यक्रम स्थल विजयनगर पर पहुंचेगी यंहा ध्वजारोहण के साथ मंडप उदघाटन तथा 108 मंडलों के साथ श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का शुभारंभ होगा जो कि लगातार चलेगा एवं 15 नवम्वर को विधान के समापन अवसर पर एतिहासिक 108 रथों पर श्री जी की विशाल ऐतिहासिक शोभायात्रा मुनिसंघ के सानिध्य में निकाली जाऐगी। धर्म प्रभावना समिति के मीडिया प्रभारी राहुल जैन, अध्यक्ष अशोक रानी डोसी महोत्सव अध्यक्ष नवीन आनंद गोधा महामंत्री हर्ष जैन,धर्मेन्द्र जैन सिन्केम, जिनेश झांझरी, पवन सिंघई प्रवक्ताअविनाश जैन विद्यावाणी सहित समस्त धर्मप्रभावना समिति के पदाधिकारिओं ने इंदौर की समस्त धर्म प्रेमी जनता से समस्त कार्यक्रम में पधार कर धर्मलाभ लेंने की अपील की है। -**अविनाश जैन**

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज एवं ससंघ के मंगलमय आशीर्वाद से निकली साइकिल यात्रा

नांदणी (विश्व परिवार)। अहिंसा, शाकाहार, व्यसनमुक्ति, पर्यावरण जागृति, राष्ट्रीय एकता, ऐसे महान उद्देश्यों का प्रचार प्रसार करने हेतु पुन: एक बार निकली साइकिल यात्रा जयसिंगपूर- नांदणी से कुलचाराम, हैदराबाद 550 किलोमीटर हैं। साधना महोदधि अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी एवं आचार्य चंद्रप्रभ सागर जी के मंगल आशीर्वाद से। इस साइकिल यात्रा का प्रारंभ आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज एवम ससंघ के मंगलमय आशीर्वाद से जयसिंगपूर- नांदणी से प्रारंभ हुई। प्रमुख उपस्थिति इचलकरंजी से अजीत जैन और नितेशजी पाटनी, बैंगलोर से वैभव जी जैन। ये यात्रा जयसिंहपुर-नांदणी से कुलचाराम, हैदराबाद करीब 550 किलोमीटर तक की होगी. करीब 25 साइकिल सवार इस यात्रा को 4 दिन में पूरी करेंगे।

-**अभिषेक अशोक पाटील**

जिनसेन महास्वामीजी नांदणी के करकमलो से श्री सौरभ भरत गाट को कलश प्राप्त हुआ

नांदणी (विश्व परिवार)। आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज जी के परम भक्त श्री भरत जी गाट (हुपरी) और श्री सौरभ भरत गाट परिवार ने आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज नांदणी कलश स्थापना 2024 का सवाल लिया था। नांदणी में आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज जी के मंगल सानिध्य में और प. पू. जिनसेन महास्वामीजी के करकमलोसे कलश सौ चेलना भरत गाट, श्री सौरभ भरत गाट, सौ अक्षता सौरभ गाट को प्राप्त हुआ। गाट परिवार बहुत ही धार्मिक हैं। भरतजी गाट साहब कि जननी दिक्षा लेकर कोमलश्री माताजी बनकर सम्मेद शिखरजी में सल्लेखना पूर्वक समाधी प्राप्त कि हैं। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

-**अभिषेक अशोक पाटील**

सादरी और कुडुख बोली में बनी स्थानीय फ़िल्म 'झरियो' अंधविश्वास के खिलाफ सामाजिक जागरुकता ला रही

राज्योत्सव में फिल्म 'झरियो द अनटोल्ड स्टोरी' देखेंगे जशपुरवासी

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में उरांव जनजाति कि सादरी और कुडुख बोली में स्थानीय शार्ट फ़िल्म झरियो कि शूटिंग जशपुर कि खूबसूरत वादियों में की गई है। यह फ़िल्म सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वास के खिलाफ सामाजिक जागरुकता लाने के उद्देश्य से प्रेरित है। इस फिल्म की निर्माता ऐलिस स्टेला एव लेखिका, निर्देशिका एवं संगीतकार सरोज संगीता भोई हैं। छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस के मौके पर फिल्म 'झरियो द अनटोल्ड स्टोरी' कि प्रस्तुति बहुत ही प्रेरणादायक है। फ़िल्म की कहानी झरियो नामक एक महिला पर आधारित है। अंधविश्वास के कारण ग्रामीण उसे डायन बुलाते थे, जिसे गांव से बाहर कर दिया गया था। जिसके कारण वह जंगलों में रहती थी। जब भी ग्रामीण लकड़िया चुनने जंगल जाते उसे देखकर रास्ता बदल लेते थे। गांव में कोई भी घटना घटता तो सारे आरोप झरियो पर ही लगाएं जाते, जिससे वह काफी परेशान थी। जिसका कोई साथ नहीं दे रहा था, और कुछ दिनों बाद उसकी तबियत खराब हो गई. एक पत्रकार ने कुछ दिन पुर्व झरियों पर समाचार प्रकाशित किया था। जब वह गांव में दुबारा मिलने आया तो उसने देखा कि गांव के सरपंच व स्थानीय लोग उसे डायन कहने लगे हैं। इसके बाद वह झरियों से मिलने जंगल चला गया जहां आवाज सुनकर महिलाएं डर रहीं थीं। उनको ऐसा लगा जैसे यह झरियो कर रहीं है। उसी दौरान जब पत्रकार झरियो से मिला तभी झरियो ने रोकर अपनी व्यस्था सुनाई। तब पत्रकार उसे लेकर गांव में पहुंचा तो ग्रामीण उसे डायन कहकर बुलाने लगे। पत्रकार ने ग्रामीणों को समझाया कि डायन जैसा कुछ नहीं होता है, बताया कि बैगा गुनिया व अंधविश्वास के चक्कर में मत पड़े। किसी को डायन कहने पर कड़ी सजा का प्रावधान है, ऐसा कहने पर उनको जेल भी जाना पड़ सकता है।

जिले में फिल्मों के प्रति युवाओं में काफी दीवानगी है। हर कोई सोशल मीडिया मे अपना टेलेंट दिखा रहें हैं। जिसे देखते हुए ऐलिस स्टेला ने अपने शार्ट फ़िल्म में उभरते हुए स्थानीय कलाकारों को झरियों में एक्टिंग का मौका दिया हैं। उन्होंने नवोदित कलाकारों को फ़िल्म कि स्टोरी सुनाकर अभिनय कि बारीकीयों को समझाया। कलाकारों ने एक्टिंग के हाव भाव को समझकर फ़िल्म में शानदार एक्टिंग कि प्रस्तुति दी है. ज्ञात हो कि जशपुर जिले मे लघु कला सिनेमा (आर्ट शॉर्ट फिल्म) स्थानीय बोली कुडुख एवं सादरी में पहली बार प्रदर्शित हुआ है जिसमे अपनी प्रतिभा एवं लगन के दम पर अपने स्व0 पिता के आर्शिवाद स्वरुप रोबिनस नेस्ट प्रोडक्शन की शुरु ?आत की है। अरुणा द राइजिंग गर्ल उनकी पहली शार्ट फिल्म थी जो यू ट्यूब पर आ चुकी है जो उरांव जनजाति की बोली कुडुख एव स्थानीय बोली सादरी पर बनी है। सरोज संगीता बोई ने कहा कि स्थानीय भाषाओं में फिल्म बनाना और इसके माध्यम से सामाजिक जागरुकता लाना हमारे लिए गर्व की बात है। जशपुर जिला वनाच्छादित इलाका है, जहां पहाड़, जंगलों के आलावा पर्यटन के काफी बेहतरीन दृश्य हैं। यहां प्राकृतिक सुंदरता की भरमार हैं। शॉट मूवी में गांव के सीन शहर के नजदीक स्थित सारुडीह और बरटोली से लिए गए हैं।

राग का त्याग, त्याग का राग करना ही चारित्र है : विराग मुनि

एमजी रोड रायपुर स्थित श्री जैन दादाबाड़ी में विशेष प्रवचन श्रृंखला

रायपुर (विश्व परिवार)। राग का त्याग करें। त्याग का राग रखें। यही संयम जीवन का सार है। व्यक्ति संसार में रहकर चाहता है कि दुख न हो। भला बिना छेद वाली चलनी भी कहीं मिलती है ? जैसे छेद बिना चलनी नहीं हो सकती, वैसे ही दुख बिना इस संसार करी कल्पना बेकार है। जहां संयोग है, वहां वियोग भी तय है। योग-वियोग से ऊपर मोक्ष को अपनी आत्मा का परम लक्ष्य बनाइए। असल आनंद इसी में छिपा है।

एमजी रोड स्थित श्री जैन दादाबाड़ी में चल रही विशेष प्रवचन श्रृंखला में सोमवार को श्री विराग मुनि ने ये बातें कही। उन्होंने कहा कि बैंक बैलेंस में आगे जितना शून्य लगता जाएगा, जीवन में उतनी ही ज्यादा शून्यता आती जाएगी। जीवन में अगर आप अवसर तलाश रहे हैं, तो सबसे पहले उस शब्द को समझिए जिसकी तलाश में हैं। अवसर कहता है अब सर। यानी जन्म-मरण के चक्र से आगे बढ़। व्यक्ति के जीवन की 4 स्थितियां समझाते हुए मुनिश्री ने कहा, एक मक्खी होती है जो शक्कर पर बैठती है। मीठे का आनंद भी लेती है और समय आने पर उड़ भी जाती है। तीर्थंकरों की आत्माएं इसी श्रेणी की हैं। दूसरी मक्खी जो पत्थर पर बैठती है। न कोई आनंद, न कोई बंधन। पूरी तरह स्वतंत्र। ये श्रेणी चारित्र अपनाने वालों की होती है। तीसरी श्रेणी की मक्खी शहद पर बैठती है। शहद का आनंद तो लेती है, पर उससे इस तरह चिपकती है कि फिर चाहकर भी उड़ नहीं पाती। बहुतेरे जीव इसी स्थिति में हैं। चौथी श्रेणी की मक्खी या जीव हम उस आत्मा को मान सकते हैं जो जीते जी भी दुख पाती है और मरने के बाद भी नाना प्रकार की यातनाएं सहनी पड़ती हैं। पहली श्रेणी में जाने लायक जीव इस काल में तो कोई नहीं है। चारित्र अपनाकर हम दूसरी श्रेणी की आत्मा बन सकते हैं, जो न तो भोग-विषयों में लिप्त है, न ही किसी तरह से परतंत्र है। तीसरी और चौथी श्रेणी की आत्मा तो अनंतकाल से है और अनादिकाल भी बने रहेंगे, अगर अभी खुद में सुधार कर आत्मशुद्धि नहीं की।

निकिता चलेंगी संयम पथ पर, दीक्षा के लिए निकाला 23 नवंबर का शुभ मुहूर्त : राजस्थान के पानी में रहने वाली मुमुक्षु निकिता कटारिया दीक्षा लेने जा रहीं हैं। सोमवार को एमजी रोड स्थित श्री जैन दादाबाड़ी में इसके लिए मुहूर्त निकाला गया। गुरुवर श्री विनय कुशल मुनि म.सा. ने दीक्षा के लिए 23 नवंबर की तारीख नियत की है। इसी दिन 2 अन्य मुमुक्षुओं अरिहंतम बुरड़ और नीलेश मेहता की भी दीक्षा होनी है। इस तरह दादाबाड़ी की पावन धरा पर एकसाथ तीन दीक्षाएं संपन्न होने जा रहीं हैं। इस महोत्सव को लेकर पूरा समाज खासा उत्साहित है। श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट, आत्मस्पर्शीय चातुर्मास समिति के साथ उपधान तप का लाभार्थी मुकेश, राकेश, राजेश बुरड़ परिवार इसे ऐतिहासिक और भव्य बनाने के लिए तन, मन, धन के साथ तैयारियों में जुट गया है।

ऐसे उदाहरण बिड़ले ही... संयम खुद तो ले रहे, दूसरे की बाधा भी दूर की : धर्मसभा में मुमुक्षु निकिता कटारिया ने भी अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि पहले भी एक बार दीक्षा लेने की इच्छा जताई थी। योग-संयोग ऐसे बने कि दीक्षा लेना दूर, पारिवारिक कारणों से 2 साल तक प्रवचन-सत्संग भी छूट गया। हालांकि, इसके बाद भी मन में लगातार चारित्र अपनाने के विचार चलते रहे। इस बीच उपधान तप में शामिल होने का मौका मिला। इससे मन के भीतर संयम की भावना और भी बलवती हो उठी। घर की लाडली होने की वजह से परिवारवाले थोड़े चिंतित थे। कुछ समय और रूकने कह रहे थे। इस बीच उनकी मुमुक्षु अरिहंत बुरड़ से मुलाकात हुई। उन्हें संयम लेने की इच्छा के बारे में बताया। इसके बाद उन्होंने खुद मेरे माता-पिता से बात कर उन्हें ऐसे कन्विंस किया कि इस बार वे मना नहीं कर पाए।

अंबिकापुर में जिला स्तरीय राज्योत्सव आज, कृषि मंत्री रामविचार नेताम होंगे समारोह के मुख्य अतिथि

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सुनील मानिकपुरी सहित स्थानीय कलाकार देंगे प्रस्तुतियां

विभागीय स्टॉल में शासकीय योजनाओं के दिखेंगे जीवंत मॉडल

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर अंबिकापुर जिला मुख्यालय में 05 नवंबर को कला केंद्र मैदान में जिला स्तरीय राज्योत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह के मुख्य अतिथि कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम होंगे। कार्यक्रम में विधायक सर्व श्री राजेश अग्रवाल, श्री प्रबोध मिंज, श्री रामकुमार टोप्पो, राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष श्री विश्व विजय सिंह तोमर, नगर पालिका निगम अम्बिकापुर के महापौर डॉ अजय तिर्की एवं जिला पंचायत सरगुजा की अध्यक्ष श्रीमती मधु सिंह शामिल होंगी।

कलेक्टर श्री विलास भोसकर तथा एसपी श्री योगेश पटेल ने सोमवार को समारोह स्थल पर कार्यक्रम की अंतिम तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने बैठक व्यवस्था, साज-सज्जा, साफ-सफाई, स्टॉल, सुरक्षा व्यवस्था, पार्किंग, आवागमन, पेयजल, विद्युत व्यवस्था सहित अन्य सभी तैयारियां सुनिश्चित करने के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। इस मौके पर राज्योत्सव में विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाए जाएंगे, जिसमें विभागीय योजनाओं के की जानकारी के साथ ही विभागों द्वारा विकास पर आधारित प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का होगा आयोजन

समारोह में विद्यालय-महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के द्वारा गीत-संगीत, नृत्य की रंगारंग प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इस अवसर पर हमर पारा तुंहर पारा फेम छत्तीसगढ़ी लोक गायक श्री सुनील मानिकपुरी द्वारा लोकगीतों की प्रस्तुति दी जाएगी। वहीं गायिका हिमांगी त्रिपाठी, गायक राहुल मण्डल, प्रियांशु मिश्रा, गायिका शताक्षी वर्मा भी अपनी प्रस्तुतियां देंगे। इसके साथ ही नीरा यादव एवं सृष्टि भदौरिया द्वारा शास्त्रीय नृत्य, रामदल द्वारा शैला नृत्य, रिदम बैण्ड द्वारा प्रस्तुति, गौरव एण्ड टीम द्वारा आर्केस्ट्रा की प्रस्तुति भी दी जायेगी।

महासमुन्द जिले में राज्योत्सव का आयोजन आज, मंत्री दयालदास बघेल होंगे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

पद्मश्री डॉ. सुरेन्द्र दुबे अपने कविताओं से बांधेंगे समां, छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति की बिखरेगी छटा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य के स्थापना दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय महासमुन्द में 05 नवम्बर को आयोजित राज्योत्सव का शुभारम्भ मिनी स्टेडियम महासमुन्द में शाम 04:00 बजे से होगा। समारोह के मुख्य अतिथि खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण एवं प्रभारी मंत्री श्री दयालदास बघेल होंगे। इस अवसर पर महासमुंद लोकसभा सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी, विधायक महासमुंद श्री योगेश्वर राजू सिन्हा, विधायक बसना श्री संपत अग्रवाल, विधायक खल्लारी श्री द्वारकाधीश यादव, विधायक सरायपाली श्रीमती चातुरीनंद, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती उषा पटेल, नगरपालिका अध्यक्ष महासमुंद श्रीमती राशि महिलांग, जनपद अध्यक्ष श्री यतेंद्र साहू, नगरपालिका अध्यक्ष सरायपाली श्री चंद्रकुमार पटेल, जनपद पंचायत अध्यक्ष बागबाहरा श्रीमती स्मृति हितेश चंद्राकर, नगरपालिका अध्यक्ष बागबाहरा श्रीमती हीरा संतराम बघेल, जनपद पंचायत अध्यक्ष सरायपाली श्रीमती कुमारी भास्कर, नगर पंचायत अध्यक्ष तुमगांव श्री राकेश चंद्राकर, जनपद पंचायत अध्यक्ष बसना श्रीमती रुक्मणी सुभाषचंद्र पटेल, नगर पंचायत अध्यक्ष बसना श्री गजेंद्र साहू, जनपद पंचायत अध्यक्ष पिथौरा श्री सत्यभामा नाग एवं नगर पंचायत अध्यक्ष पिथौरा श्री आत्माराम यादव के विशिष्ट आतिथ्य एवं गणमान्य अतिथियो, नागरिकों की गरिमामय उपस्थिति में कार्यक्रम होगा।

अतिथियों के आगमान के पश्चात् विभागीय स्टॉलों का अवलोकन किया जायेगा। शाम 05:00 बजे से छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति होगी। जिसमें कवि पद्मश्री डॉ. सुरेन्द्र दुबे अपने मनभावन कविताओं से समा बांधेंगे। महतारी लोक कला मंच खरोरा की प्रस्तुति से छत्तीसगढ़ी की समृद्ध लोक संस्कृति की छटा बिखरेगी तथा अलंकार बैंड पार्टी की रंगारंग संगीतमयी कार्यक्रम की धूम रहेगी।

राज्योत्सव में जिला पंचायत, स्वास्थ्य विभाग, कृषि, उद्यानिकी, मत्स्य पालन, पशु चिकित्सा, जल संसाधन, आदिवासी विकास विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, क्रेडा, जल संसाधन, जिला परिवहन, पुलिस विभाग, जिला सेनानी, रेशम, आईटीआई, विधिक सेवा प्राधिकरण, बैंक, जनसंपर्क, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग, शिक्षा विभाग, समाज कल्याण विभाग, वन विभाग, श्रम विभाग, महिला बाल विकास विभाग सहित अन्य विभागों द्वारा विकास कार्यों की प्रदर्शनी लगाई जाएगी। समारोह में स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

संक्षिप्त समाचार

नक्सलियों ने साप्ताहिक बाजार में ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा जवानों पर किया हमला

सुकमा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्र सुकमा जिले में नक्सलियों ने बड़ी वारदात को अंजाम दिया है. जगरगुंडा साप्ताहिक बाजार में ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा जवानों पर नक्सलियों ने अचानक हमला कर दिया. इस फायरिंग में दो जवान गंभीर रूप से घायल हो गए हैं. घायलों को तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है. जानकारी के अनुसार, यह घटना आज सुबह उस समय हुई जब जगरगुंडा साप्ताहिक बाजार में जवान ड्यूटी पर तैनात थे. नक्सलियों की स्मॉल एक्शन टीम ने इस हमले को अंजाम दिया है. इस हमले के बाद बाजार में अफरा तफरी मच गई, और पुलिस ने इलाके को घेर लिया है. इलाके में सर्च ऑपरेशन जारी है. फिलहाल, घायल जवानों का जगरगुंडा अस्पताल में इलाज जारी है. घायल जवानों के नाम करतम देवा और सोढ़ी कन्ना हैं, जिनमें से एक की हालत गंभीर बताई जा रही है.

कार का शीशा तोड़कर एक लाख रूपये की उठाईगिरी

रायगढ(विश्व परिवार)। जिले के लैलूंगा में अज्ञात उठाईगिर ने एक कार से एक लाख रूपये पार कर दिये। आरोपी ने कार का शीशा तोड़कर उठाईगिरी को अंजाम दिया। फिलहाल मामले में लैलूंगा पुलिस अज्ञात आरोपी को खिलाफ अपराध दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार मामला 30 अक्टूबर का है। खेती किसानी का काम करने वाला ग्राम चिराईखार निवासी मनेश पैकरा 30 अक्टूबर को अपनी वेगानार कार से लैलूंगा एसबीआई बैंक गया था। जहां से दीपावाली पर्व की खरीददारी के लिए उसने एक लाख रूपये निकाले और कार की डिक्की पर रखकर पास में मौजूद एक प्रोविजन स्टोर में कुछ सामान की खरीदी करने के लिए गया था। जहां से लौटकर कार के पास आया तो देखा कि कार के बाएं तरफ का कांच टूटा हुआ था तथा कार में रखे एक लाख रूपये गायब थे। जिसके बाद मनेश ने आसपास के लोगों से इसकी पुछताछ की तथा लगातार अपने स्तर पर चोर की पतासाजी करने का प्रयास कर रहा था किंतु किसी भी प्रकार की जानकारी नही मिलने पर आखिरकार रविवार को मनेश ने इसकी सूचना लैलूंगा थाने में दर्ज कराई।

जगदलपुर-बीजापुर नेशनल हाईवे में ट्रक और कार की जोरदार भिड़ंत,एक गंभीर

जगदलपुर(विश्व परिवार)। रविवार को जगदलपुर-बीजापुर नेशनल हाईवे 63 में तेज रफ्तार ट्रक और स्कॉर्पियो की जोरदार भिड़ंत हो गई। इस हादसे में स्कॉर्पियो चालक गंभीर रूप से घायल हो गया वहीं ट्रक चालक को भी मामूली चोट आई है। मामला कोड़ेनार थाना क्षेत्र का है। मिली जानकारी के अनुसार रविवार को एक स्कॉर्पियो कार गीदम से रायपुर की ओर जा रही थी इसी दौरान जगदलपुर-बीजापुर नेशनल हाईवे 63 रायकोट के पास विपरित दिशा से तेज रफ्तार से आ रही ट्रक से जोरदार भिड़ंत हो गई। इस हादसे में स्कॉर्पियो के परखच्चे उड़ गए तथा स्कार्पियो चालक को गंभीर चोट आई। वहीं ट्रक चालक को मामूली चोट आई है।

अधिकारियों को मोबाईल देने का निर्णय लेकर विवादों में फंसा सीआईएल प्रबंधन

कोरबा(विश्व परिवार)। कोल इंडिया के स्थापना दिवस पर सीआईएल प्रबंधन केवल अधिकारियों को उपहार में मोबाईल देने का फैसला लेकर विवादों में फंस गया है। श्रमिक संगठन इस पर कामगारों के साथ भेदभाव का आरोप लगाते हुए विरोध जता रहा है। जानकारी के अनुसार कोल इंडिया के 50 वें स्थापना दिवस के मौके पर सीआईएल प्रबंधन ने अधिकारियों को 30 हजार से लेकर 60 हजार रूपए कीमत तक का मोबाईल उपहार स्वरूप देने का निर्णय लिया है। स्थापना दिवस पर निजी व सार्वजनिक कंपनियां अपने अधिनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उत्साहित करने के लिए ऐसा करती है, परंतु इस बार कोल इंडिया प्रबंधन का यह निर्णय विवादों में आ गया है। विवाद का कारण कोल इंडिया के विकास में बराबर योगदान देने वाले कर्मचारियों को उपहार न देकर केवल अधिकारियों को ही उपहार देना। कोयला मजदूर सभा एचएमएस के अध्यक्ष रेशम लाल यादव निदेश तकीकि को पत्र लिखकर भेदभाव का आरोप लगाया तथा पत्र में पिछले स्थापना दिवस में केवल अधिकारियों को ही पीआरपी, लेपटॉप, कम्बल, चश्मे का रीएंबर्समेंट देने और ग्रेच्युटी देने में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच भेदभाव का जिक्र करते हुए कर्मचारियों को भी यथोचितस सम्मान एवं उपहार रूपी मोबाईल देने की मांग की है।

संगोष्ठी के साथ मनाया गया एटक का 104 वां स्थापना दिवस

कोरबा(विश्व परिवार)। एल्युमिनियम एम्पलाइज यूनियन (एटक) बालको के द्वारा अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) का 31 अक्टूबर 2024 को 104 वां स्थापना दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम राज्य एटक के महासचिव हरिनाथ सिंह के द्वारा एटक का झंडा फहराया गया। उसके उपरांत गुरुदास दास गुप्ता की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर एवं मौन धारण कर पुण्यतिथि मनाई गई। उसके बाद मजदूर एकता जिंदाबाद ,दुनिया के मजदूर एक हो ,श्रम की लूट के खिलाफ एक हो , कामरेड गुरुदास दासगुप्ता अमर रहे अन्य गगनभेदी नारे लगाये गए। संगोष्ठी का कार्यक्रम रखा गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में हरिनाथ सिंह उपस्थित थे जिन्होंने एटक के इतिहास के बारे में और भविष्य के बारे में अपने शब्दों में कहा कि ,भारतीय मजदूरो का प्रथम केंद्रीय ट्रेड यूनियनध् संगठन के रूप में 31 अक्टूबर 1920 को अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) की स्थापना हुई। आज हम इसकी 104 वीं जयंती मना रहे हैं। 104 वर्ष एक लंबी अवधि होती है, इस अवधि में विश्व में भारी परिवर्तन आया है और भारत ब्रिटिश उपनिवेश से निकलकर एक विकासशील स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में बदल चुका है। श्रम बल के बनावट और जागरूकता की रूप में भी भारी बदलाव आया है जिसके फलस्वरुप ट्रेड यूनियन के स्वरूप और क्रियाकलाप भी बदल गए हैं। इस लंबे सफरनामा में एटक का एक गौरवशाली बहु आयामी इतिहास रहा है। विभिन्न परिवर्तनों, उतार-चढ़ाव एवं विभाजन, एकता और फिर विभिन्नता से गुजरते हुए एटक अपने अंदर विशाल अनुभव को संजोए हुए एकमात्र संगठन है जो जीवंत और प्रभावकारी ढंग से आज भी कायम है। देश में श्रमिक वर्ग को सरकार और नियोजक पक्ष की ओर से कैसे अत्यंत खतरनाक चुनौतियों से कारगर तरीके से निपटने के लिए समर्पित निष्ठावान एवं निस्वार्थ तथा संघर्षशील कार्यकर्ता एकमात्र विकल्प है। हम मिलकर यह संकल्प लेते हैं कि कॉर्पोरेट घरानो तथा सरकार द्वारा की जा रही श्रम की लूट के खिलाफनिरंतर लड़ाई के मैदान में रहेंगे। इस कार्यक्रम में राज्य एटक के सचिव एम एल रजक, एल्युमिनियम एम्पलाइज यूनियन (एटक) के अध्यक्ष एसके सिंह, महासचिव सुनील सिंह ,पी के वर्मा,धर्मेंद्र सिंह, फुलेंदर पासवान ,अविनाश सिंह ,ताराचंद कश्यप, संतोषी बरेठ ,परितोष यादव यूनियन के सभी कार्यकारिणी एवं अन्य साथी उपस्थित हुए।

पर्यटन के क्षेत्र में जशपुर ले रहा नया रूप

एडवेंचर, इको-टूरिज्म को दिया जा रहा बढ़ावा

जशपुरनगर(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री साय के सार्थक पहल से जशपुर जिला पर्यटन के क्षेत्र में नया रूप ले रहा है। इसके साथ ही व्यापक स्तर पर एडवेंचर और इको-टूरिज्म को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने टूरिज्म को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ही विगत दिवसों में मायली नेचर कैंप में सरगुजा क्षेत्र विकास प्राधिकार की पहली बैठक आयोजित किए है। छत्तीसगढ़ का जशपुर जिला सुंदर वादियों और नदी पहाड़ झरना से परिपूर्ण खूबसूरत और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों में से एक है अब जिला तेजी से पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है। यहां के घने जंगल, पर्वतीय क्षेत्र, और अनोखी आदिवासी संस्कृति ने जशपुर को एक विशेष पहचान दिलाई है। जिला प्रशासन द्वारा पर्यटन के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किया जा रहा है। जहां विगत दिवस 4 दिवसीय देश देखा में जम्बूरी उत्सव का आयोजन किया गया है । जहां बड़ी संख्या में युवाओं ने यहां पर्यटन का आनंद लिया नजदीक से जशपुर की लोकल संस्कृति परम्परा और कर्मा नृत्य का अनुभव जाना। पर्यटकों को रोमांचक अनुभव प्रदान करना है, बल्कि उन्हें जशपुर की प्राकृतिक और सांस्कृतिक संपदा से भी जोड़ना है। जशपुर की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर को विश्व स्तर पर पहचान दिलाना है। उनका उद्देश्य एक ऐसा पर्यटन मॉडल तैयार करना है, जो न केवल पर्यटकों के लिए रोमांचक हो, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन को भी बनाए रखे पर्यटन को प्रकृति के करीब पहुंचाने का प्रयास किया है। प्राकृतिक संपदा जैसे घने जंगलों, पहाड़ियों और जल संसाधनों को भी पर्यटकों के अनुभव का हिस्सा बनाया है, जिससे न केवल पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव मिलता है, बल्कि स्थानीय समुदाय को भी रोजगार मिलता है। जशपुर की जैव विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य के करीब लाना है। इसके तहत पर्यावरण के अनुकूल गतिविधियाँ जैसे, बर्ड वॉचिंग, और प्राकृतिक स्थल भ्रमण आयोजित किए जाते हैं। इन गतिविधियों से पर्यटकों को पर्यावरणीय स्थिरता का भी ज्ञान मिलता है। एडवेंचर टूरिज्म रॉक क्लाइम्बिंग, ट्रेकिंग, और नदी के किनारे कैंपिंग जैसी गतिविधियां पर्यटकों के लिए रोमांचक अनुभव साबित होती हैं। जशपुर के प्राकृतिक परिदृश्य में आयोजित इन गतिविधियों के जरिए पर्यटन न केवल जशपुर की प्राकृतिक सुंदरता को देख सकते हैं, बल्कि साहसिक खेलों का आनंद भी ले सकते हैं। जिला प्रशासन द्वारा समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रस्तुत करने के लिए अनुभवात्मक पर्यटन का प्रारूप तैयार किया है। पर्यटक यहां स्थानीय व्यंजनों का स्वाद, आदिवासी कला और शिल्प वर्कशॉप, और पारंपरिक नृत्य-संगीत का आनंद ले सकते हैं। स्थानीय समुदाय को रोजगार के अवसर प्रदान कर, सामुदायिक विकास में अपना योगदान दिया है। स्थानीय गाइड्स, शिल्पकार, और साथ जुड़कर न केवल अपने परिवार की सहायता कर रहे हैं बल्कि जशपुर की सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित कर रहे हैं।

पहाड़ी के पास मिली अधजली लाश की पहचान उसके साइकिल के माध्यम से हुई

कोरबा(विश्व परिवार)। ग्राम हुंकरा की पहाड़ी से लगे इलाके में मिली अधजली लाश की पहचान उसके साइकिल के माध्यम से हो गई है। मृतक की शिनाख्त कोरबा जिला मुख्यालय में समग्र शिक्षा कार्यालय में पदस्थ क्लर्क, कटघोरा निवास के.जी. भारद्वाज के पुत्र अभिषेक के रूप में हुई है। 18 वर्षीय अभिषेक कक्षा 12 वीं का छात्र था। वह कल शनिवार रात कथित तौर पर दोस्त के पास जाने की बात कहकर घर से साइकिल लेकर निकला था फिर लौटा नहीं। मृतक अभिषेक श्री भारद्वाज का इकलौता पुत्र था। इस घटना ने भारद्वाज परिवार को शोक में डुबा दिया है। परिजनों सहित सहकर्मियों, ग्रामवासियों में शोक व्याप्त है। बता दें कि आज रविवार सुबह कटघोरा थाना अंतर्गत ग्राम हुंकरा की पहाड़ी के पास एक अज्ञात युवक की अधजली लाश मिली। कटघोरा पुलिस को मौके से एक जोड़ी चप्पल व गियर वाली साइकिल मिली। साइकिल पर दुकान का नाम लगा था जिससे संपर्क पर साइकिल की फ्रेम नम्बर के आधार पर खरीदार का नाम हासिल किया गया। उसके बाद घर पहुंचकर जानकारी लेने पर अभिषेक के घर से गायब रहने की बात पता चली। साइकिल व चप्पल को परिजन पहचान गए। घटनास्थल पर जांच में फोरेंसिक एक्सपर्ट व डॉग स्क्वाड की भी मदद ली गई। मिले साक्ष्यों और तथ्यों के आधार पर प्रारम्भिक तौर पर मामला आत्मदाह का प्रतीत हो रहा है लेकिन किसी घटना से भी इंकार नहीं किया जा रहा है। मौत की वजह जानने के लिए पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार पुलिस व परिजनों को है।

कार्तिक पूर्णिमा देव दीपावली के अवसर पर होगी हसदेव आरती

कोरबा(विश्व परिवार)। नदी संरक्षण और समर्थन की भावना से कोरबा अंचल में नमामि हसदेव संगठन काफी समय से काम कर रहा है। कार्तिक पूर्णिमा देव दिवाली के अवसर पर हसदेव तट पर संगठन द्वारा अनुष्ठान कराया जाएगा। पिछले वर्ष से नमामि हसदेव द्वारा हर माह की अमावस्या और पूर्णिमा को हसदेव आरती की जा रही है। इसमें अधिकारियों से लेकर सामाजिक कार्यकर्ता और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे लोग यजमान बनाए गए। इनकी उपस्थिति में शाम 5 बजे से पूजा-अर्चना और हवन-पूजन की गयी। इसके पश्चात गंगा तट पर विभिन्न स्थान में होने वाली गंगा आरती के तर्ज पर यहां भी हसदेव आरती की गई। समय के साथ इसमें लोगों की संख्या बढ़ी। श्री पांडेय ने बताया कि नदियां सनातन काल से हिंदुओं की आस्था और श्रद्धा का केंद्र रही है। उनके सामने मौजूद चुनौतियां कुल मिलाकर मानवीय कारणों से है। इस दिशा में निष्ठा से काम करने की जरूरत है तभी कुछ अच्छे नतीजे आएंगे।

लैंको के शेष भू-विस्थापितों को दी जाए नौकरी: फूल सिंह राठिया

रामपुर विधायक फूल सिंह राठिया ने कलेक्टर को लिखा पत्र

कोरबा(विश्व परिवार)। लैंको अमरकंटक पावर प्लांट के कई भूविस्थपितों को अब भी रोजगार नहीं मिला है। भूमि अधिग्रहण के समय नाबालिग भू स्वामी अब बालिग हो चुके हैं। जिन्हें नियमत: नौकरी मिलना चाहिए। जिसे लेकर रामपुर विधायक फूलसिंह राठिया ने शेष भू विस्थापितों को नौकरी मुहैया कराने कलेक्टर को पत्र लिखा है। पत्र में उन्होंने 1.10.2007 एवं 12.03.2008 पूनर्वास नीति के तहत 330 भू-विस्थापितों के स्थाई नौकरी के अनुबंध के संबंध में कलेक्टर को अवगत कराया है। विधायक फूलसिंह राठिया ने पत्र में कहा है कि उरगा के ग्राम पताढ़ी स्थित लैंको अमरकंटक पावर प्लांट 300म2 के लिए वर्ष 2004-2005 में जमीन अधिग्रहण किया गया था। जमीन के बदले 330 भू-विस्थापितों को सन् 2007 में त्रिपक्षीय वार्ता कर बैठक में सर्व सहमति से सभी को स्थाई नौकरी देने का अनुबंध किया गया था। अनुबंध के समय कुछ भू-स्थापित नाबालिग थे, जो वर्तमान में बालिग हो चुके हैं और नौकरी के लिए पात्रता रखतें हैं। लैंको अमरकंटक पॉवर लिमिटेड पताढ़ी को अदानी पॉवर लिमिटेड के द्वारा अधिग्रहण किया गया है। बचे भू-विस्थापितों की नौकरी की जवाबदारी अदानी पॉवर लिमिटेड कोरबा की बनती है। अत: 330 में से बचे हुए पात्रता रखने वाले भू-विस्थापितों को स्थाई नौकरी मुहैया कराई जाए। इन भू विस्थापितों में क्रमश: सत्य विजय दिव्या, आशिष सोनवानी, मुकेश सोनवानी, उमेश सोनवानी, शैलेश सोनवानी, संजय श्रीवास, गोविन्द श्रीवास शामिल हैं, जिन्हें अविलम्ब स्थाई नौकरी उपलब्ध कराने की मांग विधायक फूलसिंह राठिया ने रखी है। राठिया ने कलेक्टर कोरबा के सभा कक्ष में दिनांक 1.10.2007 को आयोजित बैठक की कार्यवाही विवरण, सहित लैंको अमरकंटक पॉवर लिमिटेड परियोजना से संबंधित जिला स्तरीय पूनर्वास समिति की बैठक दिनांक 12.03.2008 की कार्यवाही विवरण भी पत्र के साथ प्रेषित की है। ज्ञात रहे कि विधायक फूलसिंह राठिया लैंको के भू विस्थापितों की समस्याओं को लेकर हमेशा मुखर रहे हैं। उनके प्रयास से प्रभावितों और श्रमिकों की समस्याओं के निराकरण के साथ ही कई को नौकरी भी प्रदान की जा चुकी है। अब विधायक की पहल के बाद शेष भू विस्थापितों को भी शीघ्र नौकरी मिलने की उम्मीद है।

स्वास्थ्य सुविधाओं में लापरवाही: दोकड़ा का चिकित्सा अधिकारी निलंबित

जशपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर रोहित व्यास ने शनिवार को कांसाबेल विकास के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र दोकडा़ का आकस्मिक निरीक्षण किया और मरीजों को दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सा अधिकारी अनिल कुमार भगत को अनुपस्थिति पाए जाने और स्वास्थ्य केंद्र में लोगों स्वास्थ्य सुविधाएं में लापरवाही बरतने के कारण निलंबित करने के निर्देश मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी को दिए हैं। उन्होंने सभी चिकित्सा अधिकारी और स्वास्थ्य कर्मचारियों को समय पर केन्द्र में उपस्थित होने के लिए कहा है। लोगों तक बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने दोकडा़ के सरपंच बलराम भगत और गांव वालों को श्रम दान करने अपने गांव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सुन्दर और सुघ्घर बनाने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि आपके गांव के स्कूल, आंगनबाड़ी, स्वास्थ्य केंद्र, पंचायत भवन को साफ सुथरा रखना आपकी जिम्मेदारी है। कलेक्टर ने सभी गांव वालों को आगामी शनिवार तक स्वास्थ्य कर्मचारियों के साथ मिलकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को श्रमदान करके साफ सुथरा करने के लिए कहा है। कलेक्टर ने परिसर के सेप्टिक टैंक में ढक्कन लगवाने के निर्देश दिए हैं। परिसर में पेड़ पौधे लगाने के लिए कहा है। स्वास्थ्य केंद्र के बेसीन में पानी की समस्या का सामाधान करने के निर्देश दिए हैं। और मरीजों के लिए पर्याप्त दवाई की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने संस्थागत प्रसव की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि किसी भी स्थिति में घर पर प्रसव न होने पाए इसका भी विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने मेडिकल अधिकारी को अपने क्षेत्र के तीन स्वास्थ्य केंद्र बगिया,बटाईकेला और दोकडा़ क्षेत्र का नियमित भ्रमण करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने गांव वालों की मांग पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी को दोकडा़ में पोस्टमार्टम करने के लिए सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। या आस पास चिकित्सकों को तत्काल सूचना देकर व्यवस्था बनाने के लिए कहा है। कलेक्टर ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र दोकड़ा के अंदर और बाहर परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य केंद्र में कोई शराब सेवन करके हंगामा करेगा या शासकीय कार्य में बांधा डालेगा उनके ऊपर कानूनी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में कितने प्रकार का मरीजों का टेस्ट किया जा रहा है। और कितने प्रकार का नहीं किया जा रहा है। टेस्ट मशीनों के साथ अन्य उपकरणों के चालू हालत की जानकारी मांगी है। उन्होंने मरीजों के लिए सारी व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए। मरीजों को मेन्यू चार्ट के अनुसार भोजन देने के लिए कहा है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

व्यापार समाचार

भारत बनाम न्यूजीलैंड टेस्ट सीरीज : हर मोर्चे पर बीस साबित हुई कीवी टीम

मुंबई(एजेंसी)। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने कमबैक की अविश्वसनीय कहानी लिख दी है। कीवी टीम ने भारत को उसकी ही धरती पर टेस्ट सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप कर दिया है। न्यूजीलैंड पहली ऐसी टीम बन गई है जिसने भारत का उसकी ही धरती पर तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में सूपड़ा साफ कर दिया है। न्यूजीलैंड इससे पहले श्रीलंका के खिलाफ 0-2 से हारकर भारत आया था। इसके बाद जो हुआ वह इतिहास बन चुका है। भारत के खिलाफ तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में कीवी गाथा की शुरुआत बेंगलुरु से हुई थी जहां पर भारत को 8 विकेट से हार मिली थी। इस अप्रत्याशित हार के बाद भारत ने पुणे में 113 रनों से हारकर सीरीज गंवा दी और फैंस को समझ आ चुका था कि यह सिर्फ टीम इंडिया का घटिया खेल नहीं है बल्कि कीवियों ने भी अपने खेल को स्तर को ऊंचा उठाया है। इसकी बानगी तीसरे टेस्ट में भी देखने के लिए जहां एक बार फिर भारत अपने ही घर पर फिरकी के जाल में उलझ गया। वानखेड़े में न्यूजीलैंड को 25 रनों से जीत मिली और भारत को 0-3 से हार। एजाज पटेल एक बार फिर वानखेड़े में भारत के लिए पहेली साबित हुए। उन्होंने पहली पारी में पांच और दूसरी पारी में 6 विकेट चटकाकर मैच में 11 विकेट लिए। वानखेड़े पटेल को इतना रास आता है कि वह यहां खेले गए दो टेस्ट मैचों में 25 विकेट ले चुके हैं। इसमें एक पारी में 10 विकेट लेने का ऐतिहासिक प्रदर्शन भी शामिल है। एजाज पटेल तीसरे टेस्ट के हीरो रहे। मिशेल सेंटनर दूसरे टेस्ट के हीरो साबित हुए थे। दोनों ही स्पिनरों ने अपनी गेंदबाजी से भारतीय बल्लेबाजों के दम निकाल दिए। रचिन रविंद्र पहले टेस्ट में कमाल दिखा चुके थे।

ऑटो कंपनियों के लिए अच्छी खबर, इस कारण त्योहारों के बाद भी टॉप गियर में रहेगी गाड़ियों की बिक्री

मुंबई(एजेंसी)। नवरात्रि के बाद धनतेरस और दिवाली में गाड़ियों की बंपर बिक्री हुई है। इससे ऑटो कंपनियों को अनसोल्ड इन्वेंट्री कम करने में मदद मिली है। अब त्योहारों के बाद शादियों का सीजन शुरू हो रहा है। शादियों के सीजन में भी नई गाड़ियों की अच्छी खासी बिक्री होती है। इससे ऑटो कंपनियां उत्साहित हैं। देश की प्रमुख कार कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) नवंबर में 'लाखों शादियों' के बूते अपनी वृद्धि की रफ्तार को कायम रखने की उम्मीद कर रही है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह बात कही है। कंपनी ने पिछले महीने 2,02,402 वाहनों की खुदरा बिक्री दर्ज की, जो किसी भी साल में अक्टूबर में बिक्री का सबसे ऊंचा आंकड़ा है। इसकी वजह त्योहारी मांग रही। इससे पहले अक्टूबर, 2020 में कंपनी ने 1,91,476 वाहन बेचे थे। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (विपणन और बिक्री) पार्थो बनर्जी ने कहा, हमें बताया गया है कि देशभर में नवंबर में 'कुछ लाख' शादियां होने वाली हैं। इसलिए पूरी उम्मीद है कि इससे हमें अपनी खुदरा बिक्री के मामले में भी अच्छी बढ़त मिलेगी। वह इस सवाल का जवाब दे रहे थे कि क्या कंपनी अगले कुछ माह के दौरान त्योहारी सीजन की बिक्री की रफ्तार को कायम रख पाएगी। उन्होंने कहा, हमें वास्तव में देखना होगा। लेकिन हमें लगता है कि इस बार नवंबर के महीने में काफी संख्या में शादियां हैं। शादियों के लिए दिनों की संख्या लगभग 11 या 12 दिन है जो अबतक का सबसे ऊंचा आंकड़ा है। त्योहारी सीजन के दौरान अच्छी बिक्री के बाद मारुति को चालू वित्त वर्ष में चार से पांच प्रतिशत की वृद्धि के अपने अनुमान के हासिल होने की उम्मीद है। बनर्जी ने कहा, अप्रैल से अक्टूबर की अवधि में खुदरा बिक्री के मामले में हमारी वृद्धि लगभग चार प्रतिशत रही है। अक्टूबर में हमारी वृद्धि 22.4 प्रतिशत है। इस साल की शुरुआत में हमने चार से पांच प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया था। मेरा मानना है कि हमारी वृद्धि इसी के अनुरूप रहेगी। बनर्जी ने कहा कि अक्टूबर में अच्छी बिक्री की वजह से कंपनी अपने बिक्री नेटवर्क में भंडारण के स्तर को कम करने में सफल रही है।

संवत 2081 के साथ निवेशकों के लिए खुलेगा बेहतर निवेश का नया रास्ता

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार संवत 2081 के आगमन के साथ ही निवेशकों के लिए बेहतर निवेश का नया रास्ता खोलने जा रहा है। विशेषज्ञों ने शनिवार को कहा कि निवेशकों के पास गतिशील और विकसित होते बाजार में अपने वित्तीय फैसलों को नया रूप देने का अवसर है। यह परंपरा और समृद्धि के साथ, हरित ऊर्जा, टेक्नोलॉजी और फाइनेंशियल सर्विस जैसे सेक्टर में भारत की उच्च-विकास क्षमता के साथ जुड़ी निवेश रणनीतियों को लेकर एक आदर्श समय है। बाजार के जानकारों के अनुसार, भारत की विकास पहल, मजबूत घरेलू मांग और इक्विटी बाजार में घरेलू बचत के बढ़ते रुझान को देखते हुए, आने वाला साल निवेश को लेकर नए मानक स्थापित करेगा। संवत वर्ष 2080 में, निवेशकों की संपत्ति केवल एक वर्ष में 128 लाख करोड़ रुपए (वर्तमान विनिमय दर पर लगभग 1.5 ट्रिलियन डॉलर) बढ़कर 453 लाख करोड़ रुपए हो गई। इससे संवत 2080 सबसे अधिक संपत्ति सृजन वाला वर्ष बन गया, जिसमें स्थिर सरकार, मजबूत बुनियादी ढांचे और घरेलू फंडों द्वारा रिकॉर्ड 4.7 लाख करोड़ रुपये का निवेश शामिल था। संवत 2080 में सोने और चांदी की कीमतों में भी जबरदस्त तेजी देखी गई, दोनों कीमती धातुओं ने क्रमश: 32 प्रतिशत और 39 प्रतिशत का रिटर्न दिया। टेलविंड फाइनेंशियल सर्विसेज के संयुक्त एमडी विवेक गोयल के अनुसार, आज के बाजार में विविधीकरण जरूरी है। उन्होंने आगे कहा, म्यूचुअल फंड, विशेष रूप से इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी और नवीकरणीय ऊर्जा में थीमैटिक फंड, किसी भी स्तर पर निवेशकों के लिए दीर्घकालिक विकास के साथ लाभ का संतुलित, सीधा रास्ता प्रदान करते हैं। निफ्टी 50 और सेंसेक्स जैसे इंडेक्स फंड भी भारत की शीर्ष प्रदर्शन करने वाली कंपनियों से पूंजी लगाने के लिए एक सुलभ और कम लागत वाला मार्ग प्रदान करते हैं। यह विशेष रूप से लगातार रिटर्न पाने के लक्ष्य वाले निष्क्रिय निवेशकों के लिए सही हैं। ओमनी साइंस कैपिटल के स्मॉलकेस मैनेजर और सीईओ डॉ. विकास गुप्ता ने कहा कि जहां तक मैक्रो का सवाल है, इस बात पर विचार करें कि वास्तविक रूप से जीडीपी वृद्धि 7 प्रतिशत से अधिक रहने की उम्मीद है, मुद्रास्फीति आरबीआई के लक्ष्य सीमा के भीतर है और अगले वर्ष वैश्विक केंद्रीय बैंकों द्वारा ब्याज दरों में कटौती की संभावना है।

पहला टी20 मैच : भारत ने बांग्लादेश को 7 विकेट से हराया

ग्वालियर(एजेंसी)। हार्दिक पांड्या की 16 गेंदों पर नाबाद 39 रनों की तूफानी पारी और अर्शदीप सिंह तथा वरुण चक्रवर्ती के शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारत ने रविवार को श्रीमंत माधवराव सिंधिया क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए पहले टी20 मैच में बांग्लादेश को सात विकेट से हरा दिया। भारत ने 49 गेंद शेष रहते मैच जीतकर तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है। इस तरह से यह इस प्रारूप में 100 से अधिक रनों के लक्ष्य का पीछा करने का उसका सबसे तेज प्रयास बन गया है। 128 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पांड्या ने लगातार दो चौके लगाए और 12वें ओवर की अंतिम गेंद पर तस्कीन अहमद की गेंद पर छक्का लगाकर जीत सुनिश्चित की। पांड्या ने अपनी पारी में पांच चौके और दो छक्के जड़े। सलामी बल्लेबाज संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा ने शानदार शुरुआत की। पहले ओवर में शोरफुल इस्लाम पर दो चौके लगाकर सैमसन ने मोर्चा संभाला। अगले ओवर में अभिषेक ने तस्कीन की गेंद पर छक्का और दो चौके लगाए, लेकिन 16 रन बनाकर रन आउट हो गए। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने बीच में सैमसन का साथ दिया और दोनों ने पावरप्ले में तेजी से रन बनाना जारी रखा। दोनों बल्लेबाजों ने आक्रामक शॉट खेले और रन रेट को 10 से ऊपर रखा। सूर्यकुमार ने 14 गेंदों पर तीन छक्कों और दो चौकों की मदद से 29 रन की पारी खेली। नए बल्लेबाज नितीश रेड्डी ने बीच में सैमसन का साथ दिया। भारत ने पहले छह ओवर में 71/2 रन बनाकर पावरप्ले में ही लक्ष्य का पीछा करने की नींव रख दी थी। सैमसन लय को आगे नहीं बढ़ा पाए और आठवें ओवर में मेहदी हसन मिराज ने उन्हें आउट कर दिया। उन्होंने 19 गेंदों पर 29 रन बनाए। पंड्या और रेड्डी ने सुनिश्चित किया कि भारत को लक्ष्य का पीछा करने में कोई और परेशानी न हो। टीम के सीनियर बल्लेबाज ने जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली और अपनी बेहतरीन बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए भारत को जीत दिलाई। रेड्डी 16 रन बनाकर नाबाद रहे जबकि पांड्या ने नाबाद 39 रन बनाए। इससे पहले, अर्शदीप सिंह (3-14) और वरुण चक्रवर्ती (3-31) ने तीन-तीन विकेट चटकाकर बांग्लादेश को 127 रन पर समेट दिया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी बांग्लादेश की टीम के सलामी बल्लेबाज परवेज हुसैन इमोन और लिटन दास टीम को अच्छी शुरुआत नहीं दे पाए। अर्शदीप ने मैच की पांचवीं गेंद पर ही लिटन (4) को आउट कर दिया। अगले ओवर में बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने इमोन (8) को आउट कर बांग्लादेश की पारी में और मुश्किलें खड़ी कर दीं। कप्तान नजमुल हुसैन शांतो और तोविद हृदय ने पारी को संभालने की कोशिश की और पावरप्ले में स्कोरबोर्ड को आगे बढ़ाया।

विदेशी निवेशकों ने साल 2020 का रिकॉर्ड 2024 में तोड़ा स्टॉक मार्केट से अक्टूबर में निकाले इतने हजार करोड़

मुंबई(एजेंसी)। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (स्नक्क्ष्ठ्ठ) ने चार साल बाद अपना की रिकॉर्ड तोड़ दिया है। स्नक्क्ष् ने अक्टूबर में भारतीय शेयर बाजार से 94,000 करोड़ रुपये (करीब 11.2 अरब अमेरिकी डॉलर) निकाले हैं। इस तरह यह एफपीआई की निकासी के मामले में सबसे खराब महीना रहा है। इससे पहले विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने मार्च, 2020 में शेयरों से 61,973 करोड़ रुपये निकाले थे। घरेलू बाजारों में ऊंचे मूल्यांकन तथा चीन के शेयरों के आकर्षक मूल्यांकन की वजह से एफपीआई भारतीय बाजार में बिकवाल बने हुए हैं। एफपीआई ने इस ताजा निकासी से पहले सितंबर में शेयरों में 57,724 करोड़ रुपये डाले थे। यह उनके निवेश का नौ माह का उच्चस्तर था। अप्रैल-मई में 34,252 करोड़ रुपये निकालने के बाद जून से एफपीआई लगातार लिवाल रहे थे। मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया के एसोसिएट निदेशक, प्रबंधक शोध हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा कि भविष्य में भू-राजनीतिक घटनाक्रम, ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव, चीनी अर्थव्यवस्था में प्रगति और अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के नतीजे जैसे वैश्विक घटनाक्रम भारतीय शेयरों में विदेशी निवेश को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि घरेलू मोर्चे पर मुद्रास्फीति का रुख, कंपनियों के तिमाही नतीजे और त्योहारी मांग के आंकड़ों पर एफपीआई की निगाह रहेगी। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के अनुसार, एफपीआई ने अक्टूबर में 94,017 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की है। पूरे महीने में सिर्फ एक दिन एफपीआई लिवाल रहे हैं। इस तरह 2024 में शेयरों में उनका कुल निवेश घटकर 6,593 करोड़ रुपये रह गया है। एफपीआई की बिकवाली की वजह से प्रमुख सूचकांक अपने शीर्ष स्तर से करीब आठ प्रतिशत नीचे आ गए हैं। आंकड़ों के अनुसार, एफपीआई ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान बॉन्ड से सामान्य सीमा के माध्यम से 4,406 करोड़ रुपये निकाले हैं और स्वैच्छिक प्रतिधारण मार्ग (वीआरआर) से 100 करोड़ रुपये का निवेश किया है।

भारत पहली बार घर में टेस्ट सीरीज़ 3-0 से हारा

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय टीम 147 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए तीसरे और अंतिम टेस्ट मैच के तीसरे दिन रविवार को लंच के बाद मात्र 121 रन पर ढेर हो गयी और उसे 25 रन से हार का सामना करना पड़ा। यह पहली बार हुआ है जब भारत घर पर टेस्ट सीरीज़ 3-0 से हारा है। 65 सीरीज़ बाद भारत इस स्थिति में पहुंचा है। न्यूज़ीलैड ने इतिहास रच दिया है। वो भी उस टीम के ख़िलाफ़ इतिहास रचा है जिसे बड़े बड़े सूरमा घर पर टेस्ट सीरीज़ में नहीं हरा पाए थे। ऋषभ पंत ने एकतरफा संघर्ष करते हुए 64 रन बनाये जबकि वाशिंगटन सुन्दर ने 12 रन बनाये लेकिन स्पिनिंग ट्रैक पर दूसरे बल्लेबाजों के समर्पण के कारण भारत को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। न्यूज़ीलैंड की तरफ से एजाज पटेल ने 57 रन पर छह विकेट लेकर भारतीय बल्लेबाजी की कमर तोड़ दी। ग्लेन फिलिप्स ने 42 रन पर तीन विकेट लेकर उन्हें अच्छा सहयोग दिया। पटेल ने पहली पारी में पांच विकेट लिए थे और इस तरह उन्होंने मैच में कुल 11 विकेट हासिल किये। इस हार के साथ भारत विश्व टेस्ट चैंपियनशिप अंक तालिका में अब दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। फ़िलहाल भारत की इस स्थिति के बारे में शायद न्यूज़ीलैंड के प्रशंसकों तक ने नहीं सोचा होगा। न्यूज़ीलैंड ख़ुद श्रीलंका से हार कर आई थी लेकिन उन्होंने भारत को ऐसी कड़वी याद दी जिसे भारतीय टीम और भारतीय प्रशंसक भुला नहीं पाएंगे।

फेसबुक इंडिया का नेट प्रॉफिट 43 फीसदी बढ़ा, जानें कैसे रहे गूगल इंडिया के फाइनेंशियल रिजल्ट्स

मुंबई(एजेंसी)। दिग्गज सोशल मीडिया कंपनी मेटा की एडवरटीजमेंट यूनिट फेसबुक इंडिया ऑनलाइन सर्विसेज का नेट प्रॉफिट पिछले वित्त वर्ष (2023-24) में 43 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 504.9 करोड़ रुपये रहा। टॉफलर ने फाइनेंशियल डॉक्यूमेंट्स शेयर कर ये जानकारी दी है। बताते चलें कि वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी का नेट प्रॉफिट 352.91 करोड़ रुपये रहा था। फेसबुक इंडिया ऑनलाइन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड भारत में ग्राहकों को एडवरटीजमेंट बेचने और मेटा प्लेटफॉर्म्स इंक को आईटी-इनेबल्ड सपोर्ट सर्विस और डिजाइन सपोर्ट सर्विस प्रदान करने के कारोबार में है। कंपनी ने पिछले वित्त वर्ष में 9.33 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 3034.82 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जबकि वित्त वर्ष 2022-23 में ये 2775.78 करोड़ रुपये था। टॉफलर ने रिपोर्ट में कहा, वित्त वर्ष 2023-24 के लिए कंपनी का कुल खर्च 2,350 करोड़ रुपये बताया गया है। वहीं दूसरी ओर, प्रमुख टेक्नोलॉजी कंपनी गूगल इंडिया का वित्त वर्ष 2023-24 में नेट प्रॉफिट 6 प्रतिशत बढ़कर 1424.9 करोड़ रुपये हो गया जबकि वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी का नेट प्रॉफिट 1342.5 करोड़ रुपये था। टॉफलर के मुताबिक, गूगल इंडिया की पिछले वित्त वर्ष में कुल आमदनी 7097.5 करोड़ रुपये रही। इसमें मौजूदा ऑपरेशन्स से रेवेन्यू 5921.1 करोड़ रुपये और बंद ऑपरेशन्स से 1176.4 करोड़ रुपये रहा है। वित्त वर्ष 2020-21 में गूगल इंडिया ने कंपनी के आईटी बिजनेस उपक्रम को गूगल आईटी सर्विसेज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ अलग करने के लिए राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) में एक आवेदन दायर किया था। गूगल ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा, वित्त वर्ष 2023-2024 के दौरान, व्यवस्था की योजना को एनसीएलटी द्वारा 25 मई, 2023 के आदेश के तहत मंजूरी दी गई और वित्तीय विवरणों में योजना को 30 जून 2023 से प्रभावी किया गया।व्यवस्था की योजना के अनुमोदन के बाद गूगल इंडिया के आईटी बिजनेस उपक्रमों को 1 अप्रैल, 2021 से गूगल आईटी सर्विसेज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को ट्रांसफर कर दिया गया।

सेंसेक्स की ये कंपनियां बनी संकटमोचन निवेशकों को कराई अच्छी कमाई

मुंबई(एजेंसी)। सेंसेक्स की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से छह के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में पिछले सप्ताह सामूहिक रूप से 1,07,366.05 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। भारतीय स्टेट बैंक (स्क्चढ्ढ) और आईसीआईसीआई बैंक को सबसे ज्यादा लाभ हुआ। बीएसई और एनएसई पर एक नवंबर को नव संवत 2081 की शुरुआत के मौके पर 'मुहूर्त कारोबार' आयोजित किया गया। पिछले सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 321.83 अंक या 0.40 प्रतिशत के लाभ में रहा। सप्ताह के दौरान जहां रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, आईटीसी, हिंदुस्तान यूनिलीवर और भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) का बाजार पूंजीकरण बढ़ा। वहीं, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल और इन्फोसिस के मूल्यांकन में गिरावट आई। इसके चलते इन 4 कंपनियों के स्टॉक में निवेश करने वाले निवेशकों को नुकसान उठाना पड़ा है। समीक्षाधीन सप्ताह में भारतीय स्टेट बैंक का मूल्यांकन 36,100.09 करोड़ रुपये बढ़कर 7,32,755.93 करोड़ रुपये हो गया। आईसीआईसीआई बैंक का बाजार पूंजीकरण 25,775.58 करोड़ रुपये बढ़कर 9,10,686.85 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। एलआईसी की बाजार हैसियत 16,887.74 करोड़ रुपये बढ़कर 5,88,509.41 करोड़ रुपये और रिलायंस इंडस्ट्रीज की 15,393.45 करोड़ रुपये के उछाल के साथ 18,12,120.05 करोड़ रुपये हो गई। आईटीसी ने सप्ताह के दौरान 10,671.63 करोड़ रुपये जोड़े और इसका बाजार पूंजीकरण 6,13,662.96 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। हिंदुस्तान यूनिलीवर का मूल्यांकन 2,537.56 करोड़ रुपये बढ़कर 5,96,408.50 करोड़ रुपये हो गया।

जेएसडब् ल् यू एमजी मोटर इंडिया ने सालाना 31 प्रतिशत वृद्धि के साथ अक्टूबर में 7045 यूनिट की बिक्री का बनाया रिकॉर्ड

वाहन पोर्टल ने दर्ज की 34 प्रतिशत सालाना वृद्धि

कुल बिक्री में इलेक्ट्रिक वाहनो की हिस् सेदारी रही 70 प्रतिशत उद्योग में सबसे ज्यादा

नईदिल्ली (एजेंसी)। जेएसडब् ल् यू एमजी मोटर इंडिया ने आज अक् टूबर, 2024 में 7,045 यूनिट की बिक्री करने की घोषणा की है. जो पिछले साल (अक् टूबर, 2023) की समान अवधि की तुलना में सालाना 31 प्रतिशत वृद्धि को दर्शाती है।

कंपनी के न् यू एनर्जी वाहन (एनईवी) इसकी कुल बिक्री का एक महत् वपूर्ण हिस् सा बने हुए हैं। कुल बिक्री में 70 प्रतिशत से अधिक का योगदान देश में किसी भी यात्री कार निर्माता द्वारा मासिक बिक्री का उच् चतम हिस् सा एनईवी को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

स्वच्छ परिवहन की दिशा में भारत की यात्रा में एक और महत् वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए, जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने लॉन् च के पहले महीने में ही देश की पहली इंटेलिजेंट क्रॉसओवर यूटीलिटी व् हीकल (सीयूवी) एमजी विंडसर की 3,116 यूनिट की बिक्री कर ईदी मार्केट की चमक को बढ़ाया है। ये मजबूत बिक्री आंकड़े, अक् टूबर 2024 के दौरान बेची गई अन् य सभी यात्री इलेक्ट्रिक कारों में सबसे ज् यादा है। पिछले महीने की गई अपनी घोषणा के अनुरूप कंपनी वाहन पोर्टल पर अपनी बिक्री संख् या का खुलासा करने के लिए प्रतिबद्ध है। वाहन पोर्टल के मुताबिक, कार निर्माता की इस महीने सालाना वृद्धि 34 प्रतिशत (तेलंगाना को छोड़कर) रही है। फेस्टिव सीजन में बिक्री में उल् लेखनीय वृद्धि कंपनी के इलेक्ट्रिक वाहन पोर्टफोलियो की तेजी से बढ़ती लोकप्रियता का एक मजबूत प्रमाण है।

फ्लिपकार्ट और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने मिलाया हाथ

रायपुर। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने ई-कॉमर्स के माध्यम से ग्रामीण महिला उद्यमियों को सशक्त करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के साथ मिलकर ओरिएंटेशन वर्कशॉप का आयोजन किया। ई-कॉमर्स के माध्यम से आर्थिक सशक्तीकरण पर केंद्रित इस कार्यशाला में माननीय विद्युत राज्य मंत्री श्री कृष्ण पाल गुर्जर, फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर श्री रजनीश कुमार एवं अन्य सम्मानितजन उपस्थित रहे। कार्यशाला को लेकर फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर श्री रजनीश कुमार ने कहा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ यह साझेदारी पूरे भारत में डिजिटल समावेश को विस्तार देने की फ्लिपकार्ट की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हमारा उद्देश्य हरियाणा की ग्रामीण महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक अवसर सृजित करना और नई पीढ़ी के उद्यमियों को बढ़ावा देना है, जो अपनी आजीविका को निखारने के लिए टेक्नोलॉजी का लाभ उठा सकते हैं। समर्थ प्रोग्राम का लक्ष्य वंचित समुदायों को अवसर प्रदान करना और ई-कॉमर्स का लाभ उठाते हुए सतत आजीविका निर्माण में उन्हें सशक्त बनाना है। इन समुदायों को दिशानिर्देश एवं समर्थन प्रदान करते हुए फ्लिपकार्ट ग्रामीण उद्यमियों को भारत की व्यापक विकास गाथा से जोड़ने की दिशा में काम कर रहा है। डिजिटल सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए इस कार्यशाला के माध्यम से 70 से अधिक प्रतिभागियों को प्रोडक्ट लिस्टिंग, एफिशिएंट लॉजिस्टिक्स और रणनीतिक कारोबारी विकास से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गईं। इन प्रतिभागियों में महिला उद्यमी, सूक्ष्म उद्यम एवं स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) शामिल रहे। संवाद सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी पहुंच एवं कारोबार बढ़ाने के लिए ई-कॉमर्स से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों को समझने का मौका मिला।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, मंगलवार 05 नवम्बर 2024

राज्यपाल रमेन डेका ने छठ पर्व की दी शुभकामनाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल रमेन डेका ने छठ पूजा के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। राज्यपाल ने कहा है कि सूर्य उपासना का यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति प्रेम का संदेश देता है। छठ पूजा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं बल्कि आस्था, विश्वास और प्रकृति के प्रति हमारी कृतज्ञता का प्रतीक भी है। यह पर्व हमारे जीवन में सुख, समृद्धि और शांति का संचार करने का अवसर है। इस अवसर पर उन्होंने कामना की है कि यह पर्व प्रदेशवासियों के जीवन में नई ऊर्जा और उमंग का संचार करे। सूर्य देव की कृपा से सभी का जीवन स्वस्थ, समृद्ध और खुशहाली हो।

संक्षिप्त समाचार

रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव : निर्वाचन क्षेत्र में वोटिंग के दिन अवकाश की घोषणा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की रायपुर साउथ सीट से उपचुनाव होना है। इसके लिए चुनाव आयोग ने 13 नवंबर की तारीख घोषित की है। वहीं, चुनाव तारीख घोषित होने के बाद ही प्रत्याशियों जनता दरबार में कैम्पेनिंग की जा रही है। ज्ञात हो की रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव 2024 के लिए मतदान 13 नवंबर 2024 (बुधवार) को होने वाला है। इस अवसर पर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदेश के अनुसार, निर्वाचन क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में मतदान के लिए सार्वजनिक अवकाश और सामान्य अवकाश की घोषणा की गई है। इसके अलावा, मतदान दिवस के पूर्व 12 नवंबर को मतदान केंद्र वाले सभी सरकारी और निजी स्कूलों में अवकाश घोषित किया गया है। इस दिन मतदान दलों को मतदान सामग्री का वितरण किया जाएगा और उन्हें मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया जाएगा। बता दें कि रायपुर दक्षिण उपचुनाव के लिए 30 प्रत्याशी मैदान में हैं. उपचुनाव के लिए 13 नवंबर को मतदान होना है और इसके नतीजे 23 नवंबर को आएंगे।

मुख्यमंत्री साय का राज्य प्रशासनिक सेवा के पदोन्नत अधिकारियों ने जताया आभार

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से आज यहां उनके निवास कार्यालय में राज्य प्रशासनिक सेवा के पदोन्नत अधिकारियों ने मुलाकात कर उनके प्रति आभार जताया। उल्लेखनीय है कि राज्य प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ सेवा वेतनमान पर कार्यरत 64 अधिकारियों को प्रवर सेवा वेतनमान पर तथा कनिष्ठ सेवा वेतनमान पर कार्यरत 25 अधिकारियों को वरिष्ठ सेवा वेतनमान पर विगत 28 अक्टूबर को पदोन्नत किया गया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने राज्य प्रशासनिक सेवा के सभी पदोन्नत अधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर राज्य प्रशासनिक सेवा से श्री प्रणव सिंह, श्री मनीष मिश्रा, श्री नवीन कुमार ठाकुर, सुश्री अभिलाषा पैकरा, श्री विनायक शर्मा, श्री अरुण वर्मा, श्रीमती गीता दीवान, सुश्री अर्चना पांडेय, डॉ. दीप्ति वर्मा, श्रीमती मधु हर्ष, श्रीमती ऋतु हेमनानी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी ने किया जनसंपर्क, क्षेत्र की जनता ने उत्साह के साथ किया भव्य स्वागत

रायपुर की जनता से मेरा अटूट नाता, पहले भी मिला सेवा का अवसर, इस बार भी क्षेत्र के लिए पूर्ण समर्पण से करुंगा कार्य : सुनील सोनी

- महापौर और सांसद रहने के दौरान सुनील सोनी द्वारा किये गए कार्यों से रायपुर दक्षिण की जनता खुश, भाजपा पर जताया विश्वास
- रायपुर दक्षिण को दोगुनी तेजी से आगे बढ़ाएगा कमल निशान, उन्नति और खुशहाली बनेगी क्षेत्र की पहचान : सुनील सोनी

रायपुर (विश्व परिवार)। पूर्व सांसद और रायपुर दक्षिण से भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी ने आज डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी वार्ड (भाठागांव) और महंत लक्ष्मीनारायण दास वार्ड में जनसंपर्क कर स्थानीय निवासियों से मुलाकात किया तथा रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के लाखे नगर मण्डल कार्यालय के उद्घाटन में भी शामिल हुए।

इस दौरान भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी ने कहा कि रायपुर की जनता से मेरा अटूट नाता है, रायपुर ने मुझे पहले भी सेवा का अवसर दिया है, जब मुझे महापौर के रुप में कार्य करने का अवसर मिला तो हमने रायपुर की तस्वीर और तकदीर बदलने के लिए लगातार कार्य किए जिसके परिणाम स्वरुप जेल रोड का चौड़ीकरण हुआ, कैनाल लिंकिंग रोड की आधारशिला रखी गई और गौरव पथ जैसी बेहतरीन सड़कों का निर्माण हुआ ताकि गरीब से लेकर अमीर तक रायपुर में चलने वाले हर व्यक्ति को अच्छी सड़कों की सुविधा मिल सके।

इसके साथ ही रायपुर में 33 पानी टंकियों के निर्माण के साथ 150 एमएलडी की क्षमता का वाटर फिल्टर प्लांट स्थापित किया गया, आमजन की सुविधा को प्राथमिकता देते हुए रायपुर में नगर पालिका निगम भवन (व्हाइट हाउस) का निर्माण किया गया, बूढ़ा तालाब का सौंदर्यीकरण कर वहां स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा स्थापित की गई जो न केवल राजधानी की सुंदरता को बढ़ाता है बल्कि हमारे अनमोल धरोहर और गौरवशाली इतिहास को भी दर्शाता है और आज राजधानी रायपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।

प्रतिभावान खिलाड़ियों की प्रतिभा को अवसरों से जोड़ने और रायपुर को खेल के क्षेत्र में भी आगे बढ़ाने के लिए बलबीर सिंह जुनेजा इनडोर स्टेडियम और शहीद वीर नारायण सिंह अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण हुआ।

इसके साथ ही जब सांसद के रुप में कार्य करने का अवसर मिला तो टाटीबंध में 119 करोड़ रुपए की लागत से फ्लाईओवर, स्मार्ट सिटी रायपुर हेतु 365 परियोजनाओं के लिए 757 करोड़ रुपए की स्वीकृति, 480 करोड़ रुपये से रायपुर रेलवे स्टेशन के उन्नयन का कार्य, हर घर स्वच्छ पेयजल पहुंचाने के लिए रायपुर लोकसभा में 673.78 करोड़ रुपए की 35 परियोजनों की स्वीकृति, रायपुर से बलौदाबाजार तक 75 किलोमीटर फोरलेन राष्ट्रीय राजमार्ग की स्वीकृति, सरोना रेलवे स्टेशन से एम्स में प्रवेश के लिए मार्ग निर्माण, एम्स में क्रिटिकल यूनिट का निर्माण समेत विभिन्न विकास कार्य हुए और इस उपचुनाव में कमल खिलने के बाद और अधिक उत्साह के साथ क्षेत्र के दोगुने विकास के लिए कार्य करुंगा और मैं विश्वास दिलाता हूं कि रायपुर दक्षिण को दोगुनी तेजी से आगे बढ़ाएगा कमल निशान, उन्नति और खुशहाली बनेगी क्षेत्र की पहचान।

इस दौरान क्षेत्र की जनता ने बड़े उत्साह के साथ प्रत्याशी सुनील सोनी का स्वागत किया और सुनील सोनी द्वारा महापौर तथा सांसद के रुप में क्षेत्र के लिए किये गए कार्यों और भाजपा की डबल इंजन सरकार की योजनाओं से खुशी जताते हुए भाजपा के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया।

नगर निगम की पहल : बच्चों को मिला तेलीबांधा एवं पंडरी एक्सप्रेस वे के नीचे क्रिकेट खेलने का सुरक्षित स्थान

बस्ती के बच्चे नियमित क्रिकेट खेलकर हो रहे आनंदित, आयुक्त अबिनाश मिश्रा पहुँचे, बच्चों का किया उत्साह वर्धन

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन की लोककल्याणकारी मंशा के अनुरूप रायपुर जिला प्रशासन के दिशा-निर्देश पर नगर पालिक निगम रायपुर की पहल पर राजधानी शहर रायपुर के तेलीबांधा एवं पंडरी एक्सप्रेस वे के नीचे स्थान पर बच्चों और युवाओं को क्रिकेट, वालीबाल, बास्केटबॉल, बेडमिंटन के इंडोर गेम्स खेलने सुरक्षित स्थान उपलब्ध करवा दिया गया है। वहाँ आसपास की बस्ती के बच्चे एवं युवा मल्टी परपस गेम प्लान एरिया में पहुंचकर क्रिकेट खेलकर आनंदित हो रहे हैं।

प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व एवं उप मुख्यमंत्री नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग, लोक निर्माण विभाग अरुण साव के मार्गदर्शन में राजधानी शहर में तेलीबांधा एवं पंडरी एक्सप्रेस वे के नीचे के स्थान में सुरक्षित तौर पर क्रिकेट, बेडमिंटन, वालीबाल, बास्केटबॉल के इंडोर गेम्स खेलने मल्टी परपस गेम जोन एरिया बनाया गया। वहाँ पहुंचकर आसपास की बस्तियों के बच्चे एवं युवा क्रिकेट अपने साथियों सहित खेलकर आनंदित हो रहे हैं। नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त अबिनाश मिश्रा ने वहाँ पहुंचकर बच्चों एवं युवाओं से चर्चा की एवं उनका उत्साह वर्धन किया।

वहाँ संध्या के समय प्रकाश व्यवस्था नगर निगम द्वारा दी गयी है, जिससे संध्या के पश्चात भी बच्चे एवं युवा क्रिकेट खेलकर आनंद उठाते दिखते हैं। आयुक्त अबिनाश मिश्रा ने अधीक्षण अभियंता राजेश राठौर को तेलीबांधा एवं पंडरी की तर्ज पर कचना ओवरब्रिज एवं फाफाडीह एक्सप्रेस वे के नीचे बच्चों एवं युवाओं को शीघ्र मल्टी परपेस गेम प्लान एरिया विकसित करने की कार्य योजना पर प्रस्ताव तैयार कर कार्य करवाने के निर्देश दिए हैं। पंडरी एवं तेलीबांधा एक्सप्रेस वे के नीचे बच्चों एवं युवाओं के लिए क्रिकेट, बास्केटबॉल, वालीबाल, बेडमिंटन के इंडोर गेम्स खेलने सुरक्षित स्थान देने मल्टी परपस गेम प्लान एरिया विकसित करने कार्य रायपुर जिला कलेक्टर डॉक्टर गौरव कुमार सिंह के आदेशानुसार एवं नगर निगम रायपुर के आयुक्त अबिनाश मिश्रा के निर्देशानुसार पूर्ण करवाया गया है। इससे भविष्य में राजधानी शहर में युवाओं, बच्चों की खेल प्रतिभा को निखारने का सुअवसर सहज प्राप्त हो सकेगा।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले से भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त प्रेक्षकों ने की मुलाकात

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले से आज रायपुर नगर (दक्षिण) विधानसभा उप-निर्वाचन के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त सामान्य प्रेक्षक श्रीमती जी. रेखा रानी, पुलिस प्रेक्षक श्री करण शर्मा और व्यय प्रेक्षक सुश्री कनुप्रिया दामोर ने मुलाकात की। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय में हुई इस मुलाकात के दौरान रायपुर नगर (दक्षिण) विधानसभा उप-निर्वाचन को निर्बाध, निष्पक्ष, पारदर्शी और सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न कराने विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। जिला निर्वाचन अधिकारी तथा रायपुर के कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह भी इस दौरान मौजूद थे।

भारतीय रेल ने अब तक लगभग 54 लाख यात्रियों को स्पेशल ट्रेनों से पहुंचाया अपने गंतव्य तक

भारतीय रेल द्वारा इस वर्ष चलाई जा रही लगभग 7,500 विशेष गाड़ियाँ

आज दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से 02 स्पेशल ट्रेनें 08895 गोंदिया से छपरा एवं 08897 गोंदिया से पटना स्पेशल चलाई गई

बिलासपुर (विश्व परिवार)। भारतीय रेल ने अबतक लगभग 54 लाख यात्रियों को स्पेशल ट्रेनों से अपने गंतव्य तक पहुंचाया है। रेल से यात्रा करने वाले लोगों को त्योहारों के अवसर पर उनके अपनों से मिलाने हेतु भारतीय रेलवे द्वारा महत्वपूर्ण स्टेशनों पर विशेष व्यवस्था की गई है।

भारतीय रेल द्वारा इस वर्ष लगभग 7,500 विशेष गाड़ियाँ चलाई जा रही हैं, जबकि पिछले साल 4,500 विशेष गाड़ियाँ चलाई गई थीं। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में भी दीवाली एवं छठ पूजा के दौरान 07 स्पेशल ट्रेनें (1) दुर्ग-पटना-दुर्ग, दीवाली स्पेशल (2) बिलासपुर-लोकमान्य तिलक टर्मिनल-बिलासपुर दीवाली स्पेशल (3) गोंदिया-छपरा-गोंदिया, छठ पुजा स्पेशल (4) गोंदिया-पटना-गोंदिया, छठ पुजा स्पेशल (5) बिलासपुर-हड़पसर त्यौहार स्पेशल (6) दुर्ग-अमृतसर त्यौहार स्पेशल एवं (7) बिलासपुर-लोकमान्य तिलक टर्मिनल-बिलासपुर स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है, जो कि 10 ट्रिप के लिए चलाई जा रही है। दिनांक 03 नवंबर 2024 को रेलवे ने 188 से अधिक विशेष गाड़ियाँ चलाई गई थी। आज दिनांक 04 नवंबर 2024 को 185 विशेष गाड़ियाँ चलाई जा रही हैं, जिनमें दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के 02 स्पेशल ट्रेनें 08895 गोंदिया से छपरा एवं 08897 गोंदिया से पटना स्पेशल ट्रेन शामिल है।

त्यौहार के दौरान स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं तथा गाड़ियों की पंक्चुअलिटी की मॉनिटरिंग के लिए रेलवे बोर्ड जोनल रेलवे मंडल तथा स्टेशन स्तर पर विशेष कंट्रोल रूम बनाए गए हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे ने विशेष प्रबंध किए हैं, जिसमें कतारबद्ध तरीके से ट्रेन में प्रवेश की व्यवस्था, भीड़ प्रबंधन के लिए लगाए गए हैं अतिरिक्त कर्मचारी और रेल सुरक्षा बल के जवान, कुछ महत्वपूर्ण स्टेशनों पर रेलवे ने रिजर्व रेक रखे हैं, जिसमें अधिक भीड़ होने पर इन्हें तत्काल चलाने की व्यवस्था की भी गई है।

छत्तीसगढ़ में दिसम्बर 2024 में होने वाली अग्निवीर भर्ती रैली के लिए एडमिट कार्ड जारी

रायपुर (विश्व परिवार)। सेना भर्ती कार्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़ द्वारा 4 से 12 दिसम्बर 2024 तक रायगढ़ स्टेडियम, रायगढ़ में छत्तीसगढ़ के सभी 33 जिलों के पुरुष उम्मीदवारों के लिए अग्निवीर जनरल ड्यूटी, अग्निवीर तकनीकी, अग्निवीर ऑफिस असिस्टेंट/स्टोर कीपर व अग्निवीर ट्रेड्समेन (दसवी व आठवी) का आयोजन किया जाएगा।

सेना द्वारा 22 अप्रैल 2024 से 03 मई 2024 तक ऑनलाईन सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई) का आयोजन किया गया था। ऑनलाइन परीक्षा में उतीर्ण उम्मीदवार शारीरिक दक्षता सहित और अन्य भर्ती प्रक्रियाओं में भाग ले सकेंगे। रैली में भाग लेने वाले योग्य अभ्यर्थियों को प्रवेश पत्र छ्ह्व Website (www.joinindianarmy.nic.in) और उनकी ई-मेल पर भेज दिया गया है। भर्ती में हिस्सा लेने के लिए एडमिट कार्ड व सभी कागज रैली अधिसूचना के अनुसार और साथ में आधार कार्ड से लिंक मोबाइल भी लेकर आना अनिवार्य है। रैली संबंधी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सेना भर्ती कार्यालय, रायपुर (छ.ग.) शहीद वीर नारायण सिंह अन्तराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के पास अथवा टेलीफोन नम्बर 0771-2965212 पर संपर्क किया जा सकता है।

सुपरविजन मॉड्यूल वेब एवं मोबाइल एप्लिकेशन पर प्रशिक्षण हेतु राज्यस्तरीय प्रशिक्षण सम्मेलन

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, रायपुर द्वारा नियमित रूप से संचालित किए जाने वाले कृषि सांख्यिकी सर्वेक्षण के तहत डिजिटल सामान्य फसल अनुमान सर्वेक्षण के लिए सुपरविजन मॉड्यूल वेब एवं मोबाइल एप्लिकेशन लांच किया जा रहा है। सुपरविजन मॉड्यूल वेब एवं मोबाइल एप्लिकेशन संचालन के लिए राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय परिसर, न्यू राजेन्द नगर, रायपुर में कल 05 नवम्बर, 2024 को एक दिवसीय राज्यस्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, नागपुर एवं फरीदाबाद के अधिकारियों सहित रायपुर, अंबिकापुर, बिलासपुर एवं दुर्ग के वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी भी शामिल होंगे।

प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर स्नेहिल गोस्वामी को मिला अंतरराष्ट्रीय मान्यता

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर स्नेहिल गोस्वामी को हाल ही में नेशनल एक्यूट मायोकार्डियल इंफार्क्शन कोर्स (NAMIC) के 13वें संस्करण में अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम, जो कार्डियोलॉजी क्षेत्र के प्रमुख विशेषज्ञों को एक साथ लाता है, डॉ. गोस्वामी को अपने बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और अनुभव साझा करने का मंच प्रदान करता है।

कोर्स के दौरान, डॉ. गोस्वामी ने दो महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान दिया। पहले सत्र में, उन्होंने लेफ्ट मेन बाइफुरकेशन स्टेंटिंग की जटिलताओं के बारे में विस्तार से बताया। उनके प्रस्तुति ने इस तरह की जटिल प्रक्रियाओं में सावधानीपूर्वक पूर्व-प्रक्रिया योजना और इंट्रावैस्कुलर अल्ट्रासाउंड के रणनीतिक उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. गोस्वामी ने इस चुनौतीपूर्ण हस्तक्षेप से गुजरने वाले रोगियों के लिए परिणामों को अनुकूलित करने के लिए व्यावहारिक सुझाव और तकनीकें प्रदान कीं।

दूसरे सत्र में, डॉ. गोस्वामी ने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए उच्च रक्तस्राव जोखिम वाले रोगियों में एंटीप्लेटलेट थेरेपी के महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा की। इस क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता दर्शकों को प्रभावी एंटीप्लेटलेट थेरेपी की आवश्यकता को रक्तस्राव जटिलताओं के जोखिम के साथ संतुलित करने के लिए मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण थी।

अपने शैक्षणिक योगदान के अलावा, डॉ. गोस्वामी ने मलेशियाई मेडिकल छात्रों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की, जिसमें मायोकार्डियल इंफार्क्शन के दौरान इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफिक परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस व्यावहारिक सत्र ने भावी स्वास्थ्य पेशेवरों को मूल्यवान प्रशिक्षण प्रदान किया।

NAMIC 2023 में डॉ. स्नेहिल गोस्वामी की भागीदारी ने कार्डियोलॉजी के क्षेत्र में एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ के रूप में उनकी स्थिति को और मजबूत किया है। इस कार्यक्रम में उनके योगदान ने स्वास्थ्य पेशेवरों के ज्ञान और कौशल को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, जिससे अंततः रोगी देखभाल को लाभ होगा।

डॉ. स्नेहिल गोस्वामी के बारे में : डॉ. स्नेहिल गोस्वामी एक उच्च योग्य और अनुभवी हृदय रोग विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने चिकित्सा में एमडी और कार्डियोलॉजी में डीएनबी किया है। वर्तमान में रायपुर के एमएमआई नारायणा अस्पताल से जुड़े, डॉ. गोस्वामी का वयस्क कार्डियोलॉजी में मजबूत पृष्ठभूमि है। उनकी पिछली भूमिकाओं में कोलकाता, एम्स और जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज में आरटीआईआईसीएस नारायणा हेल्थ, रायपुर जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में सीनियर रेजिडेंट पद शामिल हैं। उन्हें अपने कार्यकाल के दौरान अपने काम के लिए पुरस्कार प्राप्त कर, इस क्षेत्र में उनके योगदान के लिए मान्यता मिली है। डॉ. गोस्वामी ने प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशनों और प्रसिद्ध चिकित्सा पुस्तकों में अध्यायों के साथ चिकित्सा साहित्य में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।ये कार्यक्रम मलेशिया में हुआ।

अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल बैंड प्रतियोगिता का हुआ समापन

रेलवे सुरक्षा बल, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर ने की मेजबानी

बिलासपुर (विश्व परिवार)। रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार 13 वीं अखिल भारतीय रेसुब बैंड प्रतियोगिता के संयोजन की जिम्मेदारी दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे को दिये जाने पर बिलासपुर मंडल द्वारा यह प्रतियोगिता आयोजित कराई गई। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु 15 क्षेत्रीय रेलों, जे.आर.आर.पी.एफ. एकेडमी लखनऊ एवं रे.सु.वि.बल के कुल 239 बल सदस्य शामिल हुए।

4 नवम्बर सोमवार की शाम अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल बैंड प्रतियोगिता का समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि सुश्री नीनु इटियेरा, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर थीं। उनके साथ महानिरीक्षक-सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, उप-महानिरीक्षक-सह-मुख्य सुरक्षा आयुक्त, मंडल रेल प्रबंधक बिलासपुर, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त, बिलासपुर, सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, स्थानीय पुलिस प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी एवं रायपुर तथा नागपुर रेलवे के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान महाप्रबंधक महोदया के स्वागत पश्चात बैंड की टीमों ने अपनी धुनों पर बेहतरीन प्रर्दशन करते हुए मार्च पास्ट कर अपनी प्रतिभा का अनुपम प्रर्दशन किया।

मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियोगिता के निर्णय की घोषणा करते हुए विजेता तथा उपविजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया तथा निर्णायक मंडल को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस कड़ी में बैंड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रेलवे सुरक्षा विशेष बल,नई दिल्ली,द्वितीय स्थान दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद तथा तृतीय स्थान दक्षिण पूर्व रेलवे, खड़गपुर ने प्राप्त किया। बिगुल प्रतियोगिता में प्रथम तथा द्वितीय स्थान रेलवे सुरक्षा विशेष बल, नई दिल्ली तथा तृतीय स्थान उत्तर रेलवे, नई दिल्ली ने प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में चयनित टीम 16 नवंबर 2024 को दीमापुर,नागालैंड मे असम राइफल्स द्वारा आयोजित होने वाली 25 वीं अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता-2024 में रेलवे सुरक्षा बल की तरफ से भाग लेगी।

महानिरीक्षक महोदय द्वारा मुख्य अतिथि महोदय को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। विभिन्न क्षेत्रीय रेलों से आए बैंड के प्रदर्शन ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा के पश्चात कार्यक्रम में पधारे सभी अधिकारियों, प्रतियोगियों एवं उपस्थित अन्य लोगों हेतु बडा खाना का आयोजन किया गया। दिनांक 02.11.2024 को एन.ई. इंस्टीट्यूट मैदान में प्रतियोगिता का शुभारंभ श्री मुनव्वर खुर्शीद, महानिरीक्षक-सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त के मुख्य आतिथ्य में प्रारंभ कर वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री दिनेश सिह तोमर द्वारा सभी प्रतियोगियों का स्वागत एवं मुख्य अतिथि द्वारा उद्बोधन पश्चात प्रतियोगिता के आरंभ की घोषणा की गई।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354